04 - शोषण और दमन के विविध रूपों को उजागर...

05 - रोमांसवाद के बाद का समय और कलाकार कुर्बे

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 07 दिसंबर, 2025

06 - भोपाल शहर युवा कांग्रेस अध्यक्ष मामले में नया विवाद

07 - आदर्शवाद से यथार्थ तक नायक का बदला चरित्र

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 72, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

खजुराहो ...

फोटो-महेश मुद्गल

सुप्रभात

आजिज़ी आज है मुमकिन है
न हो कल मुझ में
इस तरह ऐब निकालो न
मुसलसल मुझ में।
ज़िंदगी है मेरी ठहरा
हुआ पानी जैसे
एक कंकर से भी हो जाती है
हलचल मुझ में।
ख़्वाहिशें आ के लिपट
जाती हैं सांपों की तरह
जब महकता है तेरी
याद का संदल मुझ में।
अब वो आया तो भटक
जाएगा रस्ता 'नुसरत'
अब घना हो गया तन्हाई का
जंगल मुझ में।

– नुसरत मेहदी

मनमानी पर लगेगी लगाम...एक्शन में सरकार

● रिफंड देने के निर्देश, नहीं तो कार्रवाई ● एयरफेयर की कीमतें हो गईं फिक्स ● 18,000 तक की सीमा लागू, दामों पर लगाम,

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिगो की मनमानी पर सरकार सख्त है। प्रधानमंत्री मोदी ने उड्डयन मंत्रालय को कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। सरकार ने इंडिगो की फ्लाइट्स में भारी गड़बड़ी और टिकटों के बेतहाशा बढ़ते दामों पर लगाम लगाने के लिए सख्त कदम उठाया है। मंत्रालय ने शनिवार को सभी एयरलाइंस के लिए किराए की ऊपरी सीमा तय कर दी है ताकि वे यात्रियों से मनमानी वसूली न कर सकें। यह फैसला तब लिया गया जब यात्रियों की ओर से लगातार शिकायतें आ रही थीं कि एयरलाइंस परिचालन में आई दिक्कतों का फायदा उठाकर बहुत ज्यादा किराया वसूल रही हैं। मंत्रालय ने कहा है कि वह इस स्थिति पर 'गंभीरता से' ध्यान दे रहा है। उसने अपनी नियामक शक्तियों का इस्तेमाल करके यह सुनिश्चित किया है कि एयरलाइंस 'निष्पक्ष और उचित' दाम बनाए रखें। सभी एयरलाइंस को पालन करने का आदेश दिया गया है। यह किराया सीमा तब तक लागू रहेगी जब तक देश भर में फ्लाइट ऑपरेशन सामान्य नहीं हो जाते। 500 किलोमीटर तक की दूरी वाली उड़ानों के लिए अधिकतम किराया 7,500 रुपये होगा। वहीं, अधिकतम किराया 18 हजार तय किया है।

मुनाफाखोरी रोकना है मकसद

सरकार का कहना है कि इस कदम का मकसद उस समय मुनाफाखोरी को रोकना है जब हजारों यात्री, जिनमें बुजुर्ग, छात्र, मरीज और फंसे हुए परिवार शामिल हैं, पहले

से ही यात्रा को लेकर अनिश्चितताओं का सामना कर रहे हैं। मंत्रालय ने कहा कि जरूरी यात्रा को किफायती बनाए रखना जनहित का मामला है। खासकर तब जब यात्रियों के नियंत्रण से बाहर की वजहों से दिक्कतें आ रही हों। इस नियम का पालन हो रहा है या नहीं, इसकी निगरानी के लिए मंत्रालय एयरलाइंस और ऑनलाइन ट्रैवल पोर्टल्स से रियल-टाइम डेटा लेगा। मंत्रालय ने चेतावनी दी है कि जो भी एयरलाइन इस सीमा का उल्लंघन करती पाई गई, उसके खिलाफ तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई की जाएगी। मंत्रालय ने यह भी कहा कि इस अस्थिर दौर में ग्राहकों का भरोसा बनाए रखने के लिए किराए में अनुशासन बहुत जरूरी है। सरकार ने इस बात पर जोर दिया है कि ये किराए की सीमाएं अस्थायी हैं। लेकिन, यात्रियों के शोषण को रोकने और घरेलू यात्रा को सुलभ बनाए रखने के लिए ये जरूरी हैं, जब तक कि परिचालन संबंधी दिक्कतें बनी हुई हैं। इससे पहले, सरकार ने उपभोक्ता शिकायतों की बाढ़ के बाद सभी एयरलाइंस के लिए अस्थायी मूल्य सीमाएं लागू करके आसमान छूते हवाई किराए पर तुरंत नकेल कसी थी। मंत्रालय ने कहा था कि वह मौजूदा व्यवधान के बीच असामान्य रूप से ऊंचे किराए वसूलते हुए देख रहा था, जिसने यात्रियों की सुरक्षा के लिए तत्काल नियामक कार्रवाई को प्रेरित किया। नए तय किए गए किराए की सीमाओं का सख्ती से पालन जरूरी है।

● बड़े पैमाने पर रद्द हो रही हैं उड़ानें

यह आदेश ऐसे समय में आया है जब भारत का विमानन नेटवर्क इंडिगो के परिचालन में आई बड़ी खराबी के कारण बड़े पैमाने पर उड़ानों के रद्द होने से जूझ रहा है। पिछले चार दिनों में इंडिगो की 1,000 से अधिक उड़ानें रद्द हो चुकी हैं, जिससे पूरे देश में व्यवधान पैदा हो गया है और बाजार में

किराए में भारी बढ़ोतरी हुई है। इंडिगो की समस्या के कारण यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई यात्री अपनी फ्लाइट के रद्द होने या बहुत ज्यादा देरी से चलने की वजह से हवाई अड्डों पर फंसे हुए हैं। ऐसे में, सरकार का यह कदम यात्रियों को बड़ी राहत देगा। यात्रियों को अब राहत मिलेगी।

एमपी में 40 किलो प्याज के मिले सिर्फ 10 रुपए

भोपाल । सीहोर जिले के किसानों को प्याज की रिकॉर्ड निचले दामों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे उनकी लागत निकालना भी मुश्किल हो गया है। थोक मूल्य 50 पैसे से लेकर 3-4 रुपये प्रति किलोग्राम तक गिर गया है, जिसके कारण किसान अपनी फसल मंडी तक लाने से कतरा रहे हैं। इस स्थिति के चलते मंडी में प्याज की आवक घटकर मात्र 800 रुपये प्रति कट्टी रह गई है। किसानों ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन

यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान से हस्तक्षेप की मांग की है और प्याज को भावांतर योजना में शामिल करने का आग्रह किया है। किसानों का कहना है कि जब लागत भी नहीं निकल रही है तो वे फसल को मंडी तक लाकर और घाटा क्यों उठाएं। इसी कारण मंडी में प्याज की आवक तेजी से घटी है। पूर्णिया गांव के एक किसान को 40 किलो की एक कट्टी का दाम केवल 10 रुपये मिला।

'मुख्यमंत्री अदम्य साहसिक कार्य पुरस्कार' की घोषणा की

होमगार्ड राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के शिल्पकार और समाज की स्थिरता के प्रहरी: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 63 वें होमगार्ड स्थापना दिवस कार्यक्रम में कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने 'निष्काम सेवा' अर्थात बिना किसी स्वार्थ और अपेक्षा के सत्यनिष्ठा से कर्तव्य करने का संदेश दिया है। इसी आदर्श पर चलते हुए होमगार्ड्स के जवान समर्पण, निष्ठा और सच्चाई के साथ निरंतर देश और समाज की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि होमगार्ड में 'होम' का अर्थ घर और 'गॉर्ड' का अर्थ प्रहरी होता है। आप साढ़े आठ करोड़ मध्यप्रदेशवासियों के प्रहरी हैं। होमगार्ड्स हर विपदा में सच्चे संकट मोचन बनकर जनता के साथ खड़े होते हैं। प्राकृतिक आपदा हो, भीड़ प्रबंधन हो, यातायात व्यवस्था हो या किसी भी विषम परिस्थिति का सामना करना हो–आप सदैव पुलिस के साथ कंधे से कंधा मिलाकर डटे रहते हैं और समाज के सच्चे हीरो बनते हैं। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने होम गार्डस के लिए स्थायी आवास देने की घोषणा की। इसके अलावा, अदम्य साहसिक कार्य सम्मान पुरस्कार देने की बात भी कही।

होमगार्ड ने भरोसे और सेवा के रूप में देश को दिया सुरक्षा कवच

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने होमगार्ड के गौरवशाली इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि आजादी के बाद जब देश नागरिक सुरक्षा का ढांचा गढ़ रहा था, तब होमगार्ड ने भरोसे और सेवा के रूप में देश को सुरक्षा कवच दिया। चाहे बाढ़ का पानी हो, आग की लपटें हों, बड़ी दुर्घटना हो सबसे पहले जनता को आपका ही खयाल आता है। आप विपदाओं और समाज के बीच चट्टान की तरह खड़े हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि होमगार्ड का जवान उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना सीमा पर खड़ा सैनिक, क्योंकि होमगार्ड राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के शिल्पकार और समाज की स्थिरता के प्रहरीहैं। उन्होंने कहा कि 2014 में एसडीआरएफ के गठन के बाद होमगार्ड, नागरिक सुरक्षा और एसडीआरएफ मिलकर एक त्रिशूल की तरह आपदा प्रबंधन को नई ऊँचाई दे रहे हैं। पिछले वर्ष 5075 नागरिकों को जीवनदान देकर आपने मानवता को सुरक्षित रखने का अद्वितीय कार्य किया है और इस वर्ष बाढ़ में सैकड़ों लोगों को रेस्क्यू कर देवदूतों की भूमिका निभाई है।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि होमगार्ड की वर्दी केवल वस्त्र नहीं, बल्कि राष्ट्रधर्म और जनता के विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने जवानों की भावना को सम्मान देते हुए कहा कि होम गार्ड सैनिक, पुलिस, रक्षक, प्रहरी की भूमिका में जहां जरूरत वहां अपनी सेवायें पूर्ण निष्ठा और समर्पण से देते हैं।

राजस्थान-एमपी के 37 शहरों में कड़ाके की ठंड

● 10 डिग्री से नीचे आया तापमान,8 दिसंबर से और बढ़ेगी ठिठुरन ● उत्तराखंड-हिमाचल में बर्फबारी का अलर्ट,केदारनाथ में-14 पारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहाड़ी इलाकों से आ रही बर्फीली हवाओं ने कई राज्यों में ठिठुरन बढ़ा दी है। राजस्थान के 18 शहरों में शनिवार को तापमान 10 डिग्री से नीचे आ गया। 7 शहरों में तापमान 5 डिग्री से नीचे पहुंच गया। फतेहपुर 1.9 डिग्री के साथ सबसे ठंडा शहर रहा। लूणकरणसर में 3.2, सीकर में 3 और नागौर में 3.1 पारा रिकॉर्ड हुआ। मध्य प्रदेश के 19 शहरों में तापमान 10 डिग्री से नीचे पहुंच गया। पचमढ़ी से पारा सबसे कम 5.8 डिग्री रिकॉर्ड हुआ। मौसम विभाग के अनुसार, पहाड़ों से सर्द हवाएं

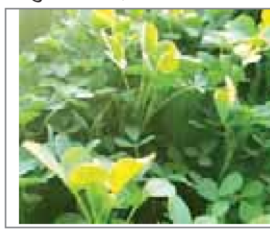

आने के कारण 7 और 8 दिसंबर को सर्दी का असर और बढ़ेगा। इधर, आईएमडी ने उत्तराखंड में रविवार को बारिश और बर्फबारी का अलर्ट जारी किया है। इससे

तापमान में 2 से 3 डिग्री की गिरावट आ सकती है। राज्य के कई जिलों में तापमान पहले से शून्य से नीचे पहुंच गया है। केदारनाथ में शुक्रवार को -14 और बद्रीनाथ में -11 डिग्री तापमान दर्ज हुआ। हिमाचल भीषण ठंड शुरू हो गई है।

● **एमपी में 19 शहरों का पारा 10 डिग्री से नीचे**– मध्य प्रदेश के भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर समेत 19 शहरों में को पारा 10 डिग्री से नीचे पहुंच गया। पचमढ़ी से पारा सबसे कम 5.8 डिग्री पर पहुंच गया। भोपाल में 8.2 डिग्री, इंदौर में 11 डिग्री, ग्वालियर में 7.5 डिग्री तापमान रहा। मौसम विभाग के अनुसार, पहाड़ी राज्यों से सर्द हवाएं आ रही हैं। इससे राज्य में 7 और 8 दिसंबर को ठिठुरन और बढ़ेगी। उत्तराखंड के केदारनाथ, बद्रीनाथ, पिथौरागढ़, चमोली सहित कई इलाकों में भीषण सर्दी पड़ रही है। केदारनाथ में शुक्रवार को तापमान माइनस 14 डिग्री और बद्रीनाथ में माइनस 11 डिग्री दर्ज पहुंच गया।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 07 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

भारत-रूस संबंध दुनिया का सबसे मजबूत रिश्ता

● जयशंकर बोले-पिछले 78 सालों में कई देशों के बीच उतार-चढ़ाव आए; हमारी दोस्ती बरकरार रही

नई दिल्ली (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत–रूस संबंधों को दुनिया के सबसे स्थिर, मजबूत और बड़े रिश्तों में से एक बताया। जयशंकर ने लीडरशिप समिट 2025 में शनिवार को यह बातें कही। उन्होंने कहा, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की दो दिवसीय भारत यात्रा का मकसद दोनों देशों के बीच के असंतुलन को दूर करना था। पुतिन की यात्रा ने पिछड़े क्षेत्रों, विशेष रूप से आर्थिक सहयोग में साझेदारी को नए तरीके से पेश किया है। जयशंकर ने कहा कि रूस का चीन, अमेरिका और यूरोप के साथ रिश्ता कई बार

ऊपर–नीचे हुआ, लेकिन भारत के साथ यह रिश्ता हमेशा स्थिर और विश्वसनीय रहा।

रक्षा, ऊर्जा के क्षेत्र में भारत–रूस संबंध मजबूत रहे– जयशंकर ने कहा कि किसी भी लंबे रिश्ते में कुछ क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ते हैं और कुछ पीछे रह जाते हैं। भारत–रूस संबंध में रक्षा, ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्र हमेशा से बहुत मजबूत रहे, लेकिन व्यापार और आर्थिक सहयोग उतना नहीं बढ़ पाया था।

भारत ने 2–1 से जीती सीरीज, विराट कोहली के बल्ले से निकला विजयी चौका

विशाखापट्टनम (एजेंसी)। भारत ने साउथ अफ्रीका को तीसरे वनडे में 9 विकेट से हरा दिया। विशाखापट्टनम में टीम इंडिया ने टॉस जीतकर बॉलिंग चुनी। साउथ अफ्रीका 270 रन ही बना सका। भारत ने 40वें ओवर में महज एक विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। डॉ बायएस राजशेखर रेड्डी स्टेडियम में मेहमान टीम के लिए क्विंटन डी कॉक ने शतक लगाया। कप्तान टेम्बा बावुमा ने 48, डेवाल्ड ब्रेविस ने 29 और मैथ्यू ब्रीट्जकी ने 24 रन बनाकर टीम को 270 तक पहुंचाया। भारत से कुलदीप यादव और प्रसिद्ध कृष्णा ने 4–4 विकेट लिए।

ब्रिटेन में खालिस्तान समर्थक आतंकवाद पर बड़ा ऐक्शन

● ब्रिटिश सिख व्यवसायी पर लगाया बैन, निशाने पर बब्बर खालसा

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन सरकार ने खालिस्तान समर्थक आतंकवादी समूह बब्बर खालसा के खिलाफ बड़ा ऐक्शन लिया है। ब्रितानी सरकार ने बब्बर खालसा के वित्तपोषण को बाधित करने के लिए देश की घरेलू आतंकवाद निरोधक व्यवस्था का पहली बार उपयोग करते हुए एक ब्रिटिश सिख व्यवसायी और उसके साथ जुड़े एक समूह के खिलाफ प्रतिबंधों की घोषणा की है। ब्रिटेन के वित्त विभाग ने गुरुवार को कहा कि पंजाब वारियर्स खेल निवेश फर्म से जुड़े गुरप्रीत सिंह रेहल की संपत्ति जब्त की जा सकती है और उन्हें निदेशक पद से अयोग्य घोषित किया जा सकता है, क्योंकि उस पर

भारत में आतंक फैलाने वाले संगठनों से जुड़े होने का संदेह है। इसके साथ ही, उसने उसी आतंकवादी समूह को बढ़ावा देने और समर्थन देने के लिए बब्बर अकाली लहर के खिलाफ संपत्ति जब्त करने की भी घोषणा की। वित्त मंत्री लूसी रिग्बी ने कहा, आतंकवादियों द्वारा ब्रिटेन की वित्तीय प्रणाली का दुरुपयोग करने पर हम चुप नहीं बैठेंगे। उन्होंने कहा, यह ऐतिहासिक कार्रवाई दर्शाती है कि हम आतंकवाद के वित्तपोषण को रोकने के लिए अपने पास मौजूद हर तरीके का इस्तेमाल करने के लिए तैयार हैं – चाहे वह कहीं भी हो और चाहे इसके लिए कोई भी जिम्मेदार हो। खुफिया सूत्रों का कहना है कि ब्रिटेन की सरकार के इस ऐक्शन से ब्रिटेन में आतंकी फंडिंग को रोकने के लिए चल रहे भारत के प्रयासों को काफी मदद मिलेगी। साथ ही भारत विरोधी गतिविधियों के लिए फंडिंग बंद होगी। इस घोषणा के बाद खेल निवेश फर्म पंजाब वारियर्स और मोरेकांबे एफसी ने एक बयान जारी करके कहा कि उन्होंने अपना सारा नाता तोड़ लिया है। लूसी रिग्बी ने कहा कि ब्रिटेन अपने देश की वित्तीय व्यवस्था के शोषण के लिए आतंकियों के साथ खड़ा नहीं होगा। इस बीच ब्रिटेन में व्यापक स्तर पर की गई कार्रवाई में अवैध रूप से काम करते पकड़े गए।

राजधानी में विभिन्न मार्गों पर बनने वाले द्वार विरासत के साथ विकास को करेंगे जीवंत: मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि राजधानी के गौरवशाली अतीत को निखारने के लिए सभी समन्वित आवश्यक प्रयास पूरी प्रतिबद्धता के साथ किए जाएंगे। महान प्रतापी राजा भोज के शासन के एक हजार साल पूर्ण होने पर भोज-नर्मदा द्वार का भूमि-पूजन किया गया था। राजधानी में महान चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य के शासन के दो हजार साल पूर्ण होने पर उनके नाम पर बनने वाले द्वार का भूमि-पूजन किया जायेगा। भोपाल में महापुरूषों के नाम पर विभिन्न मार्गों पर 9 भव्य द्वार बनेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ये बात शनिवार को समत्व भवन में विधायक श्री रामेश्वर शर्मा और हुजूर विधानसभा क्षेत्र के नागरिकों द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह में कही।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के निर्वाण दिवस पर स्मरण करते हुए कहा कि आज विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र वाले देश में %चाय वाला% प्रधानमंत्री और %गाय वाला% मुख्यमंत्री है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में विरासत के साथ विकास का कार्य निरंतर तेज गति से जारी है। राजधानी में निर्मित होने वाले भव्य द्वार विभिन्न महापुरूषों और उनकी विरासत को प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने कहा कि अयोध्या में भगवान श्रीराम मुस्कुरा रहे हैं, काशी का भी आनंद उसमें जुड़ा है और महाकाल में महालोक छाया हुआ है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में भगवान श्रीकृष्ण ने शिक्षा प्राप्त की है। आचार्य सांदीपनि का आश्रम मध्यप्रदेश की धरोहर है। भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता, अमीर और गरीब की मित्रता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। मध्यप्रदेश की धरती से सम्राट विक्रमादित्य के सुशासन का अद्भुत मॉडल सभी के लिए प्रस्तुत किया। आज सम्राट विक्रमादित्य सुशासन के लिए पूरे संसार में जाने जाते हैं। सम्राट अशोक और विश्व प्रसिद्ध धरोहर सांची को जीवंत करते

द्वार बनाए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति में गौमाता का प्रमुख स्थान है। गाय स्वयं के बच्चों के साथ हम सभी का पोषण भी करती है, इसीलिए वह %माता% के रूप में पूजी जाती है। वह अपने आंचल में ममता लिए सबका कल्याण करती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौशाला का संचालन करने वालों को सरकार सभी आवश्यक सहायता प्रदान करेगी। गौमाता की रक्षा और सुरक्षा के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। गौपालन के लिए भी सरकार ने मुख्यमंत्री डॉ. अंबेडकर कामधेनु योजना प्रारंभ की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हुजूर विधानसभा क्षेत्र के नागरिकों का मुख्यमंत्री निवास में स्वागत करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री निवास कार्यकर्ताओं का घर है। उन्होंने विधायक श्री शर्मा और नागरिकों का श्रीराम दरबार भेंट करने पर आभार माना। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का सरकार के 2 साल पूर्ण होने के अवसर पर हुजूर विधानसभा क्षेत्र के नागरिकों ने गजमाला पहनाकर अभिनंदन किया।

विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विकास का नया मॉडल प्रस्तुत किया है। इसमें विरासत के साथ विकास का अद्भुत और अद्वितीय संगम समाहित है। मुख्यमंत्री का अभिनंदन करते हुए कहा कि सम्राट विक्रमादित्य की नगरी उज्जैन के रहने वाले डॉ. यादव, सम्राट विक्रमादित्य की तरह ही सुशासन की परम्परा के सच्चे वाहक हैं।

प्रमुख बिंदु

- भोपाल में महापुरूषों के नाम पर विभिन्न मार्गों पर 9 भव्य द्वार बनेंगे।
- आज संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र वाले देश में %चाय वाला% प्रधानमंत्री और %गाय वाला% मुख्यमंत्री है।
- विधायक श्री रामेश्वर शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विकास का नया मॉडल मध्यप्रदेश में प्रस्तुत किया।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में विरासत के साथ विकास का कार्य निरंतर तेज गति से जारी है।
- राजधानी में निर्मित होने वाले भव्य द्वार विभिन्न महापुरूषों और उनकी विरासत को प्रस्तुत करेंगे।
- अयोध्या में भगवान श्रीराम मुस्कुरा रहे हैं, काशी का भी आनंद उसमें जुड़ा है और महाकाल में महालोक छाया हुआ है।
- भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता, अमीर और गरीब की मित्रता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।
- मध्यप्रदेश की धरती से सम्राट विक्रमादित्य ने सुशासन का अद्भुत मॉडल सभी के लिए प्रस्तुत किया।
- सनातन संस्कृति में गौमाता का प्रमुख स्थान है। गाय स्वयं के बच्चों के साथ हम सभी का भी पोषण करती है, इसीलिए वह %माता% के रूप में पूजी जाती है।

रुचि रखने वाले हर व्यक्ति को मिले विज्ञान पर काम का मौका: प्रो. बिट्टू

भोपाल। यदि कोई विज्ञान पढ़ना चाहता है या विज्ञान में काम करना चाहता है तो उसकी रुचि के आधार पर ही उसे विज्ञान में काम करने का मौका मिलना चाहिए। केवल टॉपर को विज्ञान पढ़ने देना विज्ञान को कमजोर करता है, ये बातें रीजनल साइंस सेंटर में एकलव्य फाउंडेशन और साइंस सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित व्याख्यान में प्रो बिट्टू के. राजाराम ने कहीं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि रैंकिंग सिस्टम से बचकर ही विज्ञान को बेहतर बना सकते हैं। प्रो. बिट्टू अशोका यूनिवर्सिटी, दिल्ली में प्रोफेसर हैं। वे विज्ञान की दुनिया में एक न्यूरोसाइंटिस्ट का सफ़र- शोध की चुनौतियाँ और आगे की दिशाएँ विषय पर बोल रहे थे।

यह व्याख्यान होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम व्याख्यानमाला का चौथा संस्करण, रीजनल साइंस सेंटर, भोपाल में आयोजित किया गया था। गौरतलब है कि यह पहल वर्ष 2022 में विज्ञान शिक्षा को समावेशन और समता के दृष्टिकोण से नए सिरे से सोचने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। एकलव्य शिक्षा और प्रकाशन के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य हर साल विज्ञान पर केंद्रित इस व्याख्यान का आयोजन करता है।

प्रोफेसर बिट्टू ने अपने व्याख्यान को विस्तार देते हुए अपनी शोध की बात की! उन्होंने मानव शरीर में कोशिका की भूमिका पर बात की। उन्होंने नमक और पानी के उदाहरण के जरिए ब्रेन के काम पर भी चर्चा की।

कार्यक्रम की शुरुआत भोपाल के युवा बैंड तत्संग ने कबीर के गीतों की प्रस्तुति की। खासतौर पर इस बैंड के युवा कलाकार रवि, आकाश, मधु, हीरा, विकास और सुमन ने चदरिया झीनी रे झीनी, बाहर क्यों भटके, रंग रंगरा फूल खिले गीत गाए।

इस कार्यक्रम में तकरीबन 100 लोग शामिल हुए और विचारों व संवाद से भरी इस शाम को अत्यंत सराहा।

अब तेजी से तैयार होंगे भारतीय सेना के बंकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन आर्मी ने ऑन-साइट 3डी कंक्रीट प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी के ऑपरेशनल डिप्लॉयमेंट के साथ डिफेंस इंफ्रास्ट्रक्चर इनोवेशन को और आगे बढ़ाया है। इसमें आईआईटी हैदराबाद के साथ मिलकर प्रोजेक्ट बंकर और

एक्सेसरीज की प्रिंटिंग के लिए पोर्टेबल रोबोटिक प्रिंटर के तहत काम किया जाएगा। यह काबिलियत पहले ही दूसरे ऑपरेशनल एरिया में साबित हो चुकी है। इसे अब सिक्किम और आस-पास की फॉरवर्ड जगहों पर त्रिशक्ति कॉर्प्स ने अच्छे से इस्तेमाल की है। स्वदेशी रोबोटिक 3डी कंक्रीट प्रिंटर, जिसमें रोबोटिक आर्म, सर्कुलर मिक्सर, पिस्टन पंप और जनरेटर लगा है। यह पूरी तरह से गाड़ी में ले जाने लायक है। साथ ही, इसे पहाड़ी इलाकों में तेजी से चलने के लिए ऑप्टिमाइज किया गया है। फॉरवर्ड-एरिया डिप्लॉयमेंट के लिए डिजाइन किया गया, यह बंकर, संेट्री पोस्ट और प्रोटेक्टिव स्ट्रक्चर को तेजी से बनाने में मदद करता है।

52 वर्ष पुराने अपने कालेज प्रज्ञा निकेतन में पहुंचे थेरो

श्रीलंका जाने के लिए दिल्ली रवाना हुए वानगल उपतिस्स नायक थेरो

भोपाल। श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के अध्यक्ष और लंकाजी टेंपल जापान के मुख्य संघनायक पूज्य वानगल उपतिस्स नायक थेरो शनिवार को बिड़ला मंदिर स्थित म्यूजियम में पहुंचे। यहां पहुंचकर उन्होंने 52 वर्ष पूर्व के अपने कालेज के दिनों को याद किया। दरअसल बिड़ला मंदिर के इस म्यूजियम में पहले प्रज्ञा निकेतन महाविद्यालय हुआ करता था जो वर्ष 2005 में बंद हो गया। उपतिस्स नायक थेरो ने वो 1972-73 में इसी कालेज में पढ़ाई की है। श्री थेरो श्रीलंका जाने के लिए दिल्ली रवाना होने के पूर्व बिड़ला मंदिर मार्ग के सामने से निकल रहे थे तभी उन्होंने अपना वाहन रुकवाया और बिड़ला मंदिर से लगे संग्रहालय में पहुंचे। यहां उन्होंने प्रज्ञा निकेतन के संबंध में जानकारी ली तो पता लगा कि कालेज तो करीब 20 साल पहले बंद हो गया है अब यहां म्यूजियम है। अपने कालेज के दिनों को याद कर प्रसन्न हुए श्री थेरो म्यूजियम में अंदर पहुंचे और अपने साथ चल रहे लोगों को बताया कि तब कालेज में कहां क्या था। 5 दशक बाद अपने छात्र जीवन को उसी भवन में याद करते हुए श्री थेरो भावुक हो गए उन्होंने अपने गुरुजनों और

साथी मित्रों को याद किया। उन्होंने कालेज के प्रोफेसर मंजुश्री राव सहित अन्य गुरुजनों को याद किया। इस दौरान स्टेट म्यूजियम के बाल कृष्ण लोखंडे वहां पहुंचे और उन्होंने श्री थेरो को कालेज और बाद में म्यूजियम के बारे में विस्तार से बताया। श्री थेरो ने म्यूजियम स्टाफ के साथ फोटो खिंचवाया इसके बाद वे दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

पालीवाल अंचल सचिव और डॉ. कर्नावट राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुने गए

भोपाल। बैंक ऑफ बड़ौदा रिटायर्ड आफिसर्स एसोसिएशन की म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ (भोपाल अंचल) की अंचल समिति के पदाधिकारियों के चार वर्षीय चुनाव संपन्न हुए। इस चुनाव में पदाधिकारियों का निर्विरोध चयन हुआ। जी एन अग्रवाल, इन्दौर अध्यक्ष , एस एन पालीवाल, भोपाल ,अंचल सचिव ,श्री पी. एस. पैठनकर, इन्दौर तथा उमाकांत गजभिए, जबलपुर उपाध्यक्ष, संजीव करंबेलकर, इन्दौर तथा एस एंटोनीसामी, रायपुर सहायक अंचल सचिव एवं अजेय कुमार, भोपाल कोषाध्यक्ष चुने गए। श्री पी. डी. जोशी, इन्दौर सहायक कोषाध्यक्ष श्री एस सत्यम, जबलपुर श्री अनिल देशमुख, ग्वालियर अंचल समिति के सदस्य मनोनीत किए गए। इसके साथ ही एसोसिएशन की गवर्निंग काउंसिल के सदस्यों के रूप में डॉ जवाहर कर्नावट, भोपाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा रंजीत कुमार मोंडल, रायपुर राष्ट्रीय सहायक महासचिव चुने गए। गवर्निंग काउंसिल के अन्य सदस्यों में कैलाश चन्द्र माहेश्वरी, इन्दौर जिनेन्द्र जैन, रतलाम, दीपक मोहिते, इन्दौर चुने गए।

योगी सरकार की नकल माफिया पर बड़ी 'स्ट्राइक'

● यूपी बोर्ड परीक्षा में लागू होंगे ये नए सिक्योरिटी फीचर्स

लखनऊ (एजेंसी)। योगी सरकार ने नकल माफिया पर बड़ी स्ट्राइक की है। यूपी बोर्ड ने हाई स्कूल और इंटरमीडिएट दोनों एग्जाम की आंसर शीट को पूरी तरह से रीडिजाइन किया है 100 साल के इतिहास में पहली बार यूपी बोर्ड परीक्षा में नकल पर नकेल कसने के लिए इतना बड़ा बदलाव किया गया है। इस बार बोर्ड परीक्षा की आंसर शीट्स अलग-अलग रंगों में नजर आएंगी। साथ ही प्रिंटिंग प्रेस से लेकर हर पेज पर मोनोग्राम होगा। उत्तर प्रदेश 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा 2026 की तैयारी शुरू हो चुकी हैं। हर साल की तरह इस साल भी यूपी बोर्ड परीक्षा में 50 लाख से अधिक विद्यार्थियों के बैठने की उम्मीद है, जो इस परीक्षा को एशिया की सबसे बड़ी परीक्षा बनाती है।

हुमायूं कबीर ने रख दी बाबरी मस्जिद की नींव

● बीजेपी बोली-आग से खेल रहीं सीएम ममता बनर्जी

कोलकाता (एजेंसी)। टीएमसी के निलंबित विधायक हुमायूं कबीर ने शनिवार को पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में बाबरी जैसी मस्जिद की आधारशिला रखी। कबीर ने मंच पर मौलवियों के साथ समारोह का फीता काटा और इस दौरान कार्यक्रम स्थल पर जमकर नारेबाजी की गई। यहां पर सुबह से ही हजारों लोग इकट्ठा हुए थे। शिलान्यास समारोह कड़ी सुरक्षा के बीच हुआ। इसमें कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए रेजिनगर और निकटवर्ती बेलडांगा क्षेत्र में पुलिस, आरएएफ और केंद्रीय बलों की बड़ी टुकड़ियां

तैनात की गईं। इससे पहले हुमायूं कबीर ने आरोप लगाया, हिंसा भड़काकर कार्यक्रम को बाधित करने की साजिशें की जा रही हैं। दक्षिण बंगाल के जिलों से लाखों लोग ऐसी कोशिशों को नाकाम कर देंगे। यह एक शांतिपूर्ण समारोह होगा। संविधान के अनुसार हमें पूजा स्थल रखने का पूरा अधिकार है। 2000 से ज्यादा वॉलंटियर ड्यूटी पर हैं। अमित मालवीय ने टीएमसी सरकार पर हमला बोला है।

मुस्लिम मुल्क में एक साथ आए दो 'दुश्मन देश'!

● भारत और पाकिस्तान की सेनाओं ने किया साझा अभ्यास

तेहरान (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच तनातनी का लंबा इतिहास रहा है। दोनों देशों के बीच कई युद्ध हो चुके हैं और वैश्विक मंचों पर भी दोनों एक-दूसरे पर हमलावर रहे हैं। खासतौर से इस साल मई में हुई चार दिन की सैन्य झड़प के बाद तो दोनों देशों के रिश्ते बेहद निचले स्तर पर हैं। इस सबके बीच दोनों देशों की सेनाओं ने एक साथ अभ्यास किया है। ये मुश्किल लगने वाला काम एससीओ के झंडे के तले ईरान में हुआ है।

ईरान के साहंद में मौजूदा साल (2025) का शंघाई सहयोग संगठन के नेतृत्व में आतंकवाद-निरोध अभ्यास हुआ है। इसमें भारत और पाकिस्तान की सेनाओं ने एक ही मैदान साझा किया। हालांकि विश्लेषकों का कहना है कि यह अभ्यास भारत-पाक के रिश्ते में सुधार का नहीं करता है। यह एक संस्थागत मजबूरी है, जिसे दोनों पक्षों ने निभाया है। यह संयुक्त आतंकवाद-निरोध अभ्यास ईरान के पूर्वी हिस्से में हुआ है।

सरकार नेहरू को इतिहास से मिटाना चाहती है: सोनिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस पार्लियामेंट्री पार्टी की चेयरपर्सन सोनिया गांधी शुक्रवार को दिल्ली स्थित जवाहर भवन में नेहरू सेंटर इंडिया के लॉन्च समारोह में शामिल हुईं। इस दौरान उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ बयानबाजी को लेकर भाजपा सरकार की आलोचना की। सोनिया ने कहा- इसमें कोई शक नहीं है कि जवाहरलाल नेहरू को बदनाम करना आज की सत्ता का मुख्य मकसद है। वह उन्हें (नेहरू को) सिर्फ इतिहास से मिटाना नहीं चाहती, बल्कि उनकी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आधारों भी को कमजोर करना चाहती है, जिन पर देश खड़ा हुआ।

पाकिस्तान ने चीन के अरुणाचल पर दावे का किया समर्थन

● पाक प्रवक्ता बोले-चीन की संप्रभुता व अखंडता पर पूरा साथ देंगे ● भारत बोला-अरुणाचल हमारा अभिन्न हिस्सा, सच्चाई नहीं बदलती

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान ने एक बार फिर चीन के अरुणाचल प्रदेश पर दावे का खुलकर समर्थन किया है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ताहिर अंद्राबी ने 5 दिसंबर को प्रेस ब्रीफिंग में कहा, 'चीन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता से जुड़े हर मुद्दे पर पाकिस्तान का लगातार और पूरा समर्थन चीन के साथ है।' अरुणाचल प्रदेश पर चीनी विदेश मंत्रालय के दिए गए बयानों के सवाल पर अंद्राबी ने यह बात कही। चीन ने 25 नवंबर को अरुणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा बताया था। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने कहा था कि जांगनान (अरुणाचल प्रदेश) हमारा हिस्सा है। उन्होंने कहा कि चीन ने

अरुणाचल प्रदेश को कभी भारत का हिस्सा नहीं माना। चीन का यह बयान भारतीय महिला के साथ बदसलूकी के आरोपों के सवाल पर आया था।

चंदन नगर थाने के टीआई को सुप्रीम कोर्ट की फटकार 'तुम इस कुर्सी के लायक नहीं'

सालभर में दर्ज 165 मामलों में सिर्फ दो गवाहों के नाम, कोर्ट की कड़ी टिप्पणी

इंदौर। शहर की पुलिस किस तरह काम कर रही है, ये बात सुप्रीम कोर्ट में भी उजागर हो गई। इंदौर पुलिस की इस बड़ी करतूत में एक साल में दर्ज 165 केसों में दो ही लोगों को गवाह बनाया गया। सुनवाई के दौरान उपस्थित कानून के छात्र असद अली वारसी ने 'गवाह फैक्ट्री' की सच्चाई सामने ला दी। असद के वकील ने बताया कि टीआई बेगुनाहों को फंसाने के लिए फर्जी मुकदमे लगाते हैं। यह सच्चाई सामने आने के बाद सुप्रीम कोर्ट में न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानतुल्लाह ने थाना प्रभारी (टीआई) इंद्रमणि पटेल को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि तुम दुर्भाग्य से उस कुर्सी पर बैठे हो, तुम्हें वहां नहीं होना चाहिए। यह हमारी आत्मा की पीड़ा है।'

सिर झुकाए खड़े टीआई पर तल्ख टिप्पणियों से पूरा कोर्ट रूम सन्न रह गया। यह मामला तब सामने आया, जब सुप्रीम कोर्ट में इंदौर के चंदूवाला रोड़ (चंदन नगर) निवासी अनवर हुसैन की याचिका पर सुनवाई चल रही थी। टीआई ने इस प्रकरण में भी गलत जानकारी दी। कोर्ट में सुनवाई के दौरान उपस्थित हुए कानून के छात्र असद अली वारसी ने टीआई की

'गवाह फैक्ट्री' की असलियत सामने ला दी। सुप्रीम कोर्ट को असद के वकील ने बताया कि टीआई बेगुनाहों को फंसाने के लिए फर्जी मुकदमे लादते हैं। असद अली ने 23 अक्टूबर 2023 से 23 अक्टूबर 2024 में दर्ज किए गए 165 आपराधिक मुकदमों की सूची दी, जिसमें सलमान कुरैशी और आमिर रंगरेज को गवाह बनाया गया। इनका नाम हर केस में गवाह के रूप में दर्ज किया गया।

साथ होते हैं क्या दोनों गवाह - थाने में फर्जी मामलों का ऐसा तरीका देखकर न्यायमूर्ति ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। इससे कोर्ट रूम में सन्नाटा छा गया और टीआई ने माफ़ी मांगते हुए अपना सिर झुका लिया। न्यायमूर्ति ने कहा कि क्या ये दोनों गवाह 24 घंटे आपके साथ ही रहते हैं! क्या इनकी थाने के सामने दुकान है! ऐसा लगता है कि मौका-ए-वारदात पर ये दोनों बैठे रहते हैं। आप किसी की जिंदगी से खेल रहे हैं। ऐसे लोग बदकिस्मती से उस पोजिशन पर हैं, जहां उन्हें नहीं होना चाहिए। एक पुलिस वाला लोगों की सुरक्षा के लिए होता है, जबकि आप ऐसा काम कर रहे हैं। ऐसे सिर झुकाने से कुछ नहीं होगा। शरीफ बनने से कोई फायदा नहीं, लोग आपका आतंक समझते हैं।

ऐसे हैं ये दर्ज मामले

वकील ने सुप्रीम कोर्ट में अपराध क्रमांक, धारा, कायमीकर्ता और थाना प्रभारी की सूची सौंपी। दर्ज प्रकरण में प्रधान आरक्षक से लेकर एसआई (कायमीकर्ता) तक का नाम दर्ज है। ये शराब तस्करी, हथियार जब्ती, रासुका और जुआ खेलने जैसे मामले हैं, जिनमें सलमान पिता जुल्फिकार कुरैशी, निवासी नाला पार, चंदननगर और आमिर पिता उस्मान रंगरेज, निवासी आमवाला रोड़, चंदन नगर का नाम गवाह के रूप में दर्ज है। इनमें कई मामले ऐसे हैं, जिनमें गवाह के रूप में दोनों के नाम हैं। कुछ मामलों में कुछ अलग नाम भी लिखे गए। अब सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद जोन-4 के डीसीपी आनंद कलादगी मामले को देख रहे हैं।

यात्रियों की 'इंडिगो' संकट से नींद उड़ी

हजारों यात्री फंसे, इंदौर-भोपाल एयरपोर्ट पर हाहाकार, जवाबदेह नहीं

प्रदेश में 65 से ज्यादा उड़ानें कैंसिल

इंदौर/भोपाल। इंडिगो एयरलाइन की उड़ाने लगातार कैंसिल होने से देश के साथ मध्यप्रदेश में भी हज़ारों यात्री प्रभावित हुए। चार दिनों में 'इंडिगो' देशभर में अपनी 1700 से ज्यादा फ्लाइट्स कैंसिल कर चुकी है। इसका बड़ा असर इंदौर, भोपाल और जबलपुर के एयरपोर्ट पर भी देखने को मिला। प्रदेश में अब तक 65 से अधिक उड़ानें रद्द हो चुकी हैं। इस अव्यवस्था से इंदौर एयरपोर्ट पर यात्रियों की लंबी कतार लगी और अफरा-तफरी का माहौल रहा।

बच्चों और बुजुर्गों को घंटों फर्श पर बैठकर इंतजार करना पड़ा। यात्रियों ने आरोप लगाया कि इंडिगो का ग्राउंड स्टाफ न तो जवाब दे रहा है और न कोई स्पष्ट व्यवस्था बता रहा है। हजारों लोगों को पूरी रात एयरपोर्ट पर ही गुजारनी पड़ी। इस बीच अन्य एयरलाइंस ने मौके का फायदा उठाते हुए किराया चार से पांच गुना तक बढ़ा दिया, इससे समस्या और बढ़ गई। भोपाल एयरपोर्ट में 18 उड़ानें रद्द होने से यात्रियों का धैर्य टूट गया। यहां 41 हज यात्रियों का समूह भी एयरपोर्ट पर फंसा रहा। वहीं जबलपुर में करीब 10 फ्लाइट्स अचानक बंद होने से 900 से अधिक यात्री प्रभावित हुए और एयरलाइन पर मनमानी का आरोप लगाया। आज (6 दिसंबर) को इंदौर-पुणे और पुणे-भोपाल की दो फ्लाइट्स भी रद्द कर दी गईं।

कई यात्रियों ने शिकायत की कि 6 हजार रुपए का टिकट बढ़कर 30 से 35 हजार तक पहुंच गया, वह भी बिना यात्रा की गारंटी के। इंडिगो ने बयान जारी कर वैकल्पिक व्यवस्था की बात कही है। लेकिन, यात्रियों का आरोप है एयरलाइन ओनरशिप नहीं ले रही, सिर्फ कैंसिलेशन बताकर रिफंड लेने को कह रही है।

दोस्त बाहर नहीं आया तो उसकी बाइक जलाई

इंदौर। गोमा की फेल में पुराने दोस्तों ने फोन करने पर जब युवक घर से बाहर नहीं आया तो गुस्से में उसके घर के बाहर खड़ी बाइक में आग लगा दी। आग से घर का पर्दा भी जल गया। फरियादी दीपक पिता प्रवीण चौहान ने तुकोगंज पुलिस को बताया कि वह अपने घर पर था, तभी उसके दोस्त प्रतीक और अक्षत ने घर के बाहर बुलाया। पिता द्वारा मना करने से मैं घर में ही रुक गया। इसी बात से गुस्सा होकर आरोपी ने मेरी बाइक क्रमांक एमपी-09 एक्स-5399 में आग लगा दी। इधर, चंदन नगर थाना क्षेत्र के नंदलाय गांव में दो भाइयों के घरों में भीषण आग लग गई। इस अग्निकांड में घर में रखा लाखों रुपए का सामान, 25 क्विंटल गेहूं, 10 क्विंटल खाद और परिसर में खड़ी कारें भी जल गईं। फायर ब्रिगेड के मुताबिक, घटना शुक्रवार सुबह करीब 4.30 बजे हुई। जहां पहले राजेश पिता मदन सिंह के मकान में आग लगी, जो देखते ही देखते उनके भाई संतोष के मकान को चपेट में ले लिया।

बोरिंग कराने से रोका तो पिस्टल दिखाई

इंदौर। माणिकबाग रोड पर प्लॉट पर बोरिंग कराने को लेकर बड़ा विवाद हो गया। तीन आरोपियो पिता और उसके दो बेटों ने मिलकर फरियादी पर पिस्टल लहराते हुए धमकाया। जूनी इंदौर पुलिस को फरियादी सद्दाम पिता नौशाद खान निवासी ब्रुक ब्रांड कॉलोनी ने बताया कि वह अपने भाई मोहम्मद परवेज के प्लॉट नंबर 45, विजयनगर माणिकबाग पर बोरिंग करवा रहे थे। तभी आरोपी हैदर शेख, अपने दोनों बेटे अब्दुल शेख और जीशान शेख के साथ मौके पर आया। तीनों पिस्टल लहराते हुए आए और सद्दाम से बोले, इस प्लॉट पर तुम्हारा कोई काम नहीं होगा, तुम बोरिंग नहीं करवा पाओगे। जब सद्दाम ने बोरिंग न करवाने का कारण पूछा तो हैदर और उसके दोनों बेटे गालियां देने लगे।

गंदगी के बीच बन रहा था आटा, फैक्ट्री सील

इंदौर। पालदा में कई दिनों से अमानक स्तर का आटा गंदगी में तैयार होने की शिकायत कलेक्टर शिवम वर्मा को मिली थी। शिकायत के बाद कलेक्टर के आदेश पर खाद्य विभाग ने एस कुमार एंड कंपनी नामक फैक्ट्री सील की। इसके साथ ही अन्य स्थानों पर भी निरीक्षण कर कार्रवाई की गई। विभाग के खाद्य नियंत्रक मोहन मारू ने बताया कि परिसर से गेहूं-आटा के चार नमूने लिए तथा खाद्य पदार्थों के निर्माण के लिए परिस्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण खाद्य पदार्थों का निर्माण तत्काल प्रभाव से बंद कराया गया। एक अन्य कार्रवाई में मां अंबे सुपारी सिकाई केंद्र समता नगर पालदा का निरीक्षण किया गया। मौके पर प्रतिष्ठान के प्रोपराइटर गोपाल अग्रवाल उपस्थित थे। यहां कच्ची सुपारी को सेंककर प्रोसेस किया जाना पाया गया। सिकी सुपारी और सुपारी सेंकने के दौरान उपयोग किए जाने वाले चूने के 2 नमूने लिए गए। विजयनगर स्थित श्री लीला रेस्टोरेंट से पनीर एवं दाल के 2 नमूने लिए गए। कलेक्टर ने बताया कि नागरिकों को शुद्ध एवं सुरक्षित खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी नमूनों को विस्तृत जांच के लिए खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल गया है।

नाबालिग और कोचिंग संचालिका से छेड़छाड़

इंदौर। कोचिंग संचालिका और नाबालिग के साथ छेड़छाड़ के मामले में आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। बाणगंगा पुलिस के मुताबिक, पीड़िता ने बताया कि वह कोचिंग पढ़ाने का काम करती है। इलाके में रहने वाला कृष्णकांत पिता अरविंद गौतम पिछले एक साल से लगातार उसे परेशान कर रहा था। वह बाहर आने-जाने के दौरान पीछा कर अश्लील इशारे करता। जब पीड़िता ने यह बात अपने परिवार को बताई तो कृष्णकांत के परिवार ने विवाद खड़ा किया। बदनामी के डर से पीड़िता चुप रही। पीड़िता के अनुसार, 27 नवंबर को घर के पास दूध लेने जाते समय आरोपी ने अश्लील कमेंट किए। पीड़िता ने मां-चाची को पूरी घटना बताई। तब उन्होंने चुप रहने की बात कही, लेकिन आरोपी की हरकतें बढ़ती रही। 1 दिसंबर को पीड़िता की मां ने आरोपी से बात करने की कोशिश की। इस दौरान कृष्णकांत ने अपशब्द कहे और धमकी देने लगा। बहन ने उसे रोकने का प्रयास किया, लेकिन आरोपी ने बहन के साथ मारपीट की और उसे धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया।

मृत महिला कांस्टेबल का पीएम, परिजन पहुंचे

इंदौर। अज्ञात कारणों के चलते लिव इन रिलेशनशिप में रह रही महिला कांस्टेबल प्रिया यादव का शनिवार को पोस्टमार्टम किया गया। कांस्टेबल ने गुरुवार रात को अपने शासकीय आवास में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। परिजनों के नहीं पहुंचने से पीएम में विलंब हुआ। शुक्रवार रात को परिजन इंदौर आकर कांस्टेबल के निवास शुभम नगर पहुंचे। मामले में ट्रैफिक जवान कवीन्द्र सिंह के बयान हुए। जवान ने बताया कि प्रिया और मेरे बीच सबकुछ सामान्य चल रहा था, उसने आत्महत्या क्यों की, पता नहीं। महिला के मोबाइल में भी पुलिस को कुछ विवादास्पद नहीं मिला। पुलिस के अनुसार, कांस्टेबल तारापुर मुंगेर बिहार की रहने वाली थी और कुछ साल पहले वह बिहार के अमित कुमार राय से दोस्ती कर लिव इन में रहने लगी थी। अमित की मौत के बाद कवीन्द्र के साथ रह रही थी। अमित इंदौर के एक थाने में पदस्थ था। उसकी मौत के बाद प्रिया को अनुकंपा नियुक्ति मिली थी। उधर, कवीन्द्र ने अपने शुरूआती बयान में बताया था कि वह प्रिया के साथ तीन साल से लिव-इन में रह रहा है।

शराब ठेकेदार की आत्महत्या ने आबकारी अधिकारी की अवैध वसूली की परतें खोली

वीडियो को कलेक्टर ने भी गंभीर बताया, कहा कि जांच के बाद कार्रवाई होगी

देवास। शराब ठेकेदार दिनेश मकवाना की आत्महत्या के बाद सामने आए वीडियो ने देवास जिले के आबकारी विभाग में अवैध वसूली के गंभीर आरोपों को उजागर कर दिया। मरने से पहले रिकॉर्ड किए गए इस वीडियो में मकवाना ने जिला आबकारी अधिकारी मंदाकिनी दीक्षित पर प्रतिमाह 1.50 लाख की वसूली का आरोप लगाया है। उसके अनुसार अब तक उससे 22 लाख से अधिक की अवैध वसूली की जा चुकी थी। इस वीडियो में मृतक स्पष्ट रूप से बताता है कि वह चापड़ा, करनावद और डबल चौकी के शराब ठेके संचालित करता था। उस पर लगातार लाखों रुपए की मांग का दबाव बनाया जाता था।

मकवाना का कहना था कि पैसे न देने पर माल सप्लाई रोकने और ठेके बंद कराने की चेतावनी दी जाती थी। बढ़ते आर्थिक नुकसान और मानसिक दबाव का हवाला देते हुए उसने खुदकुशी को अपनी मजबूरी बताया। वीडियो वायरल होने के बाद आबकारी विभाग में हड़कंप मच गया है। मृतक के परिजनों ने इंदौर

में लिखित शिकायत देकर निष्पक्ष जांच की मांग की है। देवास कलेक्टर ऋतुराज सिंह ने भी मामले को गंभीर बताते हुए कहा कि वीडियो बेहद गंभीर है।

पुलिस जांच जारी है और तथ्यों की पुष्टि के बाद कड़ी कार्रवाई की जाएगी। जिला आबकारी अधिकारी मंदाकिनी दीक्षित ने सभी आरोप सिरे से खारिज करते हुए कहा कि न तो उन्होंने किसी से अवैध वसूली की मांग की और न दबाव बनाया। मेरे कॉल रिकॉर्ड और लोकेशन सब कुछ स्पष्ट कर देंगे। विवाद को और गहरा करने वाला एक दूसरा वीडियो भी सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें कथित रूप से अधिकारी मृतक के परिवार से 2 करोड़ की रकम को लेकर समय मांगते हुए नजर आ रही हैं। इससे मामले पर और प्रश्नचिह्न लग गए।

मृतक ने 8 नवंबर को आत्महत्या की थी। परिवार ने 23 नवंबर को कनाडिया थाने में इस मामले को लेकर आवेदन दिया। इसके बाद 24 नवंबर को जिला आबकारी अधिकारी ने पुलिस अधीक्षक देवास को आवेदन सौंपा। इतने महत्वपूर्ण आरोपों के बावजूद विभागीय चुप्पी और देरी कई संदेहों को जन्म दे रही है। क्या सच में ठेकेदारों से हर महीने अवैध वसूली होती है? क्या विभागीय अधिकारियों की भूमिका इस कथित उगाही तंत्र में शामिल है? क्या आर्थिक दबाव ने एक युवा ठेकेदार की जान ले ली? अब परिवार की नजरें प्रशासन पर टिकी हैं कि वीडियो में सामने आए आरोपों पर क्या ठोस कदम उठाया जाएगा। यह मामला सिर्फ आत्महत्या नहीं, बल्कि सिस्टम में फैले कथित भ्रष्टाचार के खिलाफ उठी एक बड़ी चेतावनी माना जा रहा है।

हिंदू लड़की को बार डांसर बनाने की कोशिश करने वाला पकड़ाया

पीड़िता जहां नौकरी करती, उसी के मैनेजर ने की करतूत

इंदौर। मुस्लिम युवक मोहम्मद मंसूर एक हिंदू युवती को युवती को पढ़ाई और नौकरी का झांसा देकर मुंबई ले जा कर बेचना चाहता था। मंसूर का पिता वहाब मंसूर भी इस युवती के फर्जी दस्तावेज बनाने की कोशिश में लगा था। पश्चिम बंगाल के निवासी मोहम्मद मंसूर की मां मुंबई में बार डांसर है। इसलिए शंका है कि बाप-बेटे दोनों युवती को डांसर बनाने की कोशिश में लगे थे। पुलिस के डीसीपी जोन-1 राजेश व्यास के मुताबिक बाणगंगा निवासी 20 साल की पीड़िता ई-कॉमर्स कंपनी में ऑनलाइन नौकरी करती थी। उसकी कंपनी के सीनियर मैनेजर मोहम्मद मंसूर से बातचीत होती रहती थी। मैनेजर ने 28 नवंबर को बातचीत के बहाने उसे बुलाया और दिल्ली ले गया। उसे बड़ी कंपनी में

नौकरी और आगे पढ़ाई का झांसा दिया। उसने होटल में उसके साथ जबरदस्ती भी की और धमकाया भी। इसके बाद में उसने अपने भाई शाहनवाज को भी बुलाया। दूसरे दिन सिलीगुड़ी में रहने वाले वहाब ने कॉल कर कहा कि दिल्ली सुरक्षित नहीं है।

तुम सिलीगुड़ी आ जाओ। नाम बदलकर शादी करवा दूंगा, तभी इंदौर पुलिस पहुंच गई और मोहम्मद मंसूर को गिरफ्तार कर लिया। टीआई सियाराम सिंह गुर्जर के अनुसार पूछताछ में पता चला मोहम्मद मंसूर की मां मुंबई में बार डांसर है। शक है आरोपित युवती को मुंबई ले जाने की फिराक में थे। लेकिन, उनके मंसूबे पूरे नहीं हो सके। डीसीपी का कहना है कि युवक से पूछताछ में किसी बड़े मानव तस्करी गिरोह के बारे में अहम जानकारी मिल सकती है। फिलहाल किशोरी को सुरक्षित रखा गया है और मामले की गहन जांच जारी है।

खंडवा रोड से बुरहानपुर तक तीन गुंडों में आतंक मचाया, गिरफ्तार

मोबाइल, टैक्सी और दुकान से नकदी लूटी, मामले दर्ज

इंदौर। खंडवा रोड से बुरहानपुर तक तीन बदमाशों की गैंग ने शनिवार रात कई किलोमीटर तक अपराध की श्रृंखला चला दी। उन्होंने एक टैक्सी छीन ली और उसका जीपीएस तोड़कर ले भागे। एक ट्रक के ड्राइवर को भी लूटा और शराब दुकान का गल्ला लूट लिया। इन्हें पकड़ भी लिया गया। गैंग ने सबसे पहले इंदौर के टिगरिया बादशाह निवासी आकाश के नाम से ओंकारेश्वर जाने के लिए टैक्सी बुक की।

सुनसान ग्वालू घाट पहुंचते ही आरोपियों ने ड्राइवर संजय वर्मा पर चाकू से हमला कर मोबाइल, नकदी और टैक्सी छीन ली। इसके बाद उन्होंने जीपीएस डिवाइस तोड़कर वाहन को खंडवा रोड की तरफ मोड़ दिया। बुरहानपुर पहुंचकर भी उनका तांडव जारी रहा। हाईवे पर खड़े एक ट्रक को देखकर तीनों ने खुद को आरटीओ का कर्मचारी बताया और ड्राइवर-क्लीनर को नीचे उतरने को कहा। मौका मिलते ही दोनों पर हमला किया और रुपए लूटकर भाग निकल गए। रात देर में गणपति नाका स्थित शराब दुकान का शटर उखाड़कर गल्ले से हजारों रुपए और कई बोतलें उठा ले गए। टैक्सी इंदौर से बुक होने के कारण पुलिस को शक था कि आरोपी स्थानीय हैं। उज्जैन टीआई अमित कुमार बामनिया के निर्देशन में पुलिस ने तुरंत हाईवे पर चेकिंग शुरू कर दी और मोबाइल लोकेशन के आधार पर गैंग की मूवमेंट ट्रेस की। बदमाश रतलाम होते हुए उज्जैन जा रहे थे, जहां पुलिस ने घेराबंदी कर तीनों को गिरफ्तार कर लिया। मुख्य आरोपी आकाश का आपराधिक रिकॉर्ड पहले से ही भारी है।

छत्रीपुरा पुलिस ने चाइनीज मांझा के खिलाफ जागरूकता रैली की

तख्तियां लेकर विद्यार्थियों ने उपयोग न करने की शपथ ली

इंदौर। प्रतिबंधित चाइनीज मांझा के खिलाफ चल रहे अभियान के तहत थाना छत्रीपुरा पुलिस ने जागरूकता रैली का आयोजन किया। इस रैली में आम नागरिकों के साथ बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भी उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

यह रैली थाना छत्रीपुरा से प्रारंभ होकर बियाबानी दरगाह चौराहा, कागदीपुरा होते हुए रविदासपुरा तक निकाली गई। प्रतिभागियों ने तख्तियां लेकर नारे लगाए और लोगों से चाइनीज मांझा का उपयोग न करने की अपील की। इस दौरान पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सिंथेटिक-नायलॉन से बना यह मांझा न केवल पक्षियों के लिए घातक है, बल्कि राहगीरों, बच्चों और दोपहिया वाहन चालकों की जान को भी गंभीर खतरा पहुंचाता है। कई बार यह मांझा गंभीर कटने, दुर्घटनाओं और मौत का कारण भी बन चुका है। पुलिस ने नागरिकों से भावुक अपील करते हुए कहा कि त्योहार की खुशी किसी की जान की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। आमजन को सलाह दी गई कि वे सुरक्षित और पर्यावरण हितैषी पारंपरिक सूती धागे का ही उपयोग करें। पुलिस ने यह भी आग्रह किया कि यदि कहीं भी चाइनीज मांझा की बिक्री या भंडारण की जानकारी मिले तो तुरंत स्थानीय थाने को सूचित करें, ताकि ऐसे लोगों पर कड़ी कानूनी कार्रवाई की जा सके। रैली में शामिल स्थानीय पार्षदों, सामाजिक कार्यकताओं और विद्यार्थियों ने भी समाज को सुरक्षित और जागरूक बनाने का संदेश दिया।

पदोन्नति विवाद को लेकर एमजीएम मेडिकल कॉलेज पर संदेह का घेरा

तीन अपात्र डॉक्टर्स को नियमों के विरुद्ध पदोन्नति दे दी गई

इंदौर। एमजीएम मेडिकल कॉलेज एक बार फिर विवादों के घेरे में है। कॉलेज प्रशासन पर आरोप है कि उसने मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) के नियमों को दरकिनार करते हुए स्कूल ऑफ एक्सीलेंस फॉर आई में पदस्थ तीन डॉक्टरों को कथित रूप से अपात्र पाए जाने के बावजूद पदोन्नति दे दी। यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है और शहर में चिकित्सा शिक्षा प्रणाली की पारदर्शिता पर नए सवाल खड़े कर रहा है। भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ के सह-संयोजक डॉ कमल गोस्वामी ने इस पूरे प्रकरण पर याचिका दायर कर रखी है। उनका कहना है कि सह-प्राध्यापक डॉ मीता जोशी, डॉ टीना अग्रवाल और सहायक प्राध्यापक डॉ गुप्ता की नियुक्ति प्रक्रिया पहले से ही संदेह के घेरे में थी। पूर्व में गठित जांच समिति ने भी इन्हें पदोन्नति के लिए अयोग्य करार दिया था और प्रक्रिया लंबित रखने की सिफारिश की थी। इसके

बावजूद कॉलेज प्रबंधन द्वारा प्रमोशन स्वीकृत कर दिया गया।

शिकायतकर्ता डॉ गोस्वामी ने इंदौर संभाग आयुक्त डॉ सुदीप खाड़े को ज्ञापन सौंपकर नियुक्ति और पदोन्नति संबंधी समस्त दस्तावेज, शोध प्रकाशन, न्यायालयीन अभिलेख और जांच रिपोर्ट प्रस्तुत कर उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है। साथ ही अदालत में मामला लंबित होने के कारण पदोन्नति आदेश स्थगित करने का अनुरोध भी किया है। इस बीच, एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ अरविंद घनघोरिया ने सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा है कि प्रमोशन की प्रक्रिया पूरी तरह नियम और प्रक्रिया के अनुसार की गई है। मामला अब न्यायालय और प्रशासन के निर्णय की प्रतीक्षा में है।

युवक के पास से 1000 अल्प्राजोलम टेबलेट मिली, इसका मूल्य 45 हज़ार

राऊ पुलिस ने भी बाइक सवार दो तस्करों को गिरफ्तार किया

इंदौर। शहर में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी पर लगाम लगाने के लिए नारकोटिक्स विंग लगातार कार्रवाई कर रहा है। इसी क्रम में टीम ने युवक को 1000 अल्प्राजोलम टेबलेट के साथ दबोच लिया। आरोपी पुरानी राजकुमार सब्जी मंडी क्षेत्र में इन टेबलेट की सप्लाई करने जा रहा था। जानकारी के अनुसार, नारकोटिक्स सेल के एएसआई विजय मिश्रा को सूचना मिली थी कि चंदन नगर निवासी फैजल पिता असलम अवैध अल्प्राजोलम टेबलेट लेकर शहर में घूम रहा है। सूचना पर टीम ने घेराबंदी की और संदिग्ध युवक को पकड़कर तलाशी ली। उसके पास से 1000 अल्प्राजोलम टेबलेट बरामद हुईं, जिनकी कीमत 45 हजार रुपये बताई जा रही है। पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। अब यह पता लगाया जा रहा है कि वह यह दवाइयां कहां से लाता था और किसे सप्लाई करने वाला था। उधर, राऊ थाना पुलिस ने भी नशे के कारोबार के खिलाफ कार्रवाई करते हुए बाइक सवार दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों में रवि ठाकुर पिता अशोक सिंह निवासी पिगडम्बर और घनश्याम पाटीदार पिता अम्बाराम पाटीदार निवासी अम्बाचंदन, किशनगंज शामिल हैं। तलाशी के दौरान रवि ठाकुर के पास से 13 ग्राम और घनश्याम पाटीदार के पास से 14 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद हुई। पुलिस ने तस्करी में इस्तेमाल की जा रही मोटरसाइकिल एमपी-09 एलक्यू 2538 सहित अन्य सामान भी जब्त किया है। दोनों के खिलाफ मामला दर्ज कर पूछताछ जारी है।

शोषण और दमन के विविध रूपों को उजागर करती कहानियां

पुस्तक समीक्षा

दीपक गिरकर
समीक्षक

हिंदी की सुपरिचित कथाकार और प्रसिद्ध कहानी संग्रह 'काश पंडारी न होती' की लेखिका मृदुला श्रीवास्तव एक संवेदनशील लेखिका हैं। मृदुला श्रीवास्तव की कहानियाँ, व्यंग्य, लघुकथाएँ, बाल कथाएँ समाचार पत्रों और साहित्यिक पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। हाल ही में इनका नया कहानी संग्रह ÷जलपाश÷ अमन प्रकाशन से प्रकाशित होकर आया है। इस संग्रह की आठ कहानियाँ समाज के उन तबकों की सच्चाइयों को उजागर करती हैं, जो अक्सर मुख्यधारा की दृष्टि से ओझल रह जाते हैं। शोषण, हाशिए की पीड़ा, भ्रूण हत्या, बेरोजगारी जैसे ज्वलंत मुद्दों पर आधारित ये कहानियाँ केवल सामाजिक नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक गहराई में उतरती हैं।

मृदुला की लेखनी उन आवाज़ों को स्वर देती है जो न केवल दबाई जाती रही हैं, बल्कि अक्सर अनसुनी भी रह जाती हैं। कथाकार अपने आसपास के परिवेश से चरित्र खोजती है। कहानियों के प्रत्येक पात्र की अपनी चारित्रिक विशेषता है, अपना परिवेश है जिसे लेखिका ने सफलतापूर्वक निरूपित किया है। संग्रह की भूमिका में हिमाचल प्रदेश के सुप्रसिद्ध साहित्यकार गुरमीत बेदी ने कहानी 'पुशबैक' की तुलना मंटो के चरित्रों से करते हुए इसे 'अंदर तक झकझोर देने वाली कहानी' बताया है। वहीं वरिष्ठ कथाकार महेश दर्पण ने इसे लेखिका की 'कथायात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव' माना है। अरुण होता, जो पश्चिम बंगाल के प्रतिष्ठित आलोचकों में गिने जाते हैं, के शब्दों में, 'जलपाश' की कहानियाँ लंबे समय तक पाठकों के मन में गूंजती रहेंगी।

संग्रह की पहली कहानी 'खिलौने वाला' शहरी झुग्गियों में पलते जीवन के संघर्ष, गरीबी, दुर्व्यसन और सामाजिक विसंगतियों का मार्मिक चित्र है। जपला जैसे पात्रों के माध्यम से लेखिका उस वर्ग की पीड़ा उजागर करती हैं, जो हाशिये पर जीता है - नशे, बेरोजगारी और टूटे संबंधों में। जपला की बेटी बन्नी अपने घर की जिम्मेदारी कम उम्र में उठाती है, पर अंततः शोषण और उपेक्षा की शिकार होती है। जपला की भीतरी संवेदना और आत्मग्लानि अंततः उसकी मृत्यु में व्यक्त होती है। कहानी में संवाद और आत्मालाप के माध्यम से पात्रों का मनोविज्ञान प्रभावी रूप से उभरता है। यद्यपि कहीं-कहीं तारतम्यता में बाधा है, फिर भी कथा का संवेदनात्मक प्रवाह पाठक को बाँधे रखता है। 'खिलौने वाला' न केवल एक व्यक्ति की, बल्कि पूरे वर्ग की विडंबना का प्रतीक है - जहाँ गरीबी, अशिक्षा और व्यसन जीवन की संभावनाओं को निगल जाते हैं।

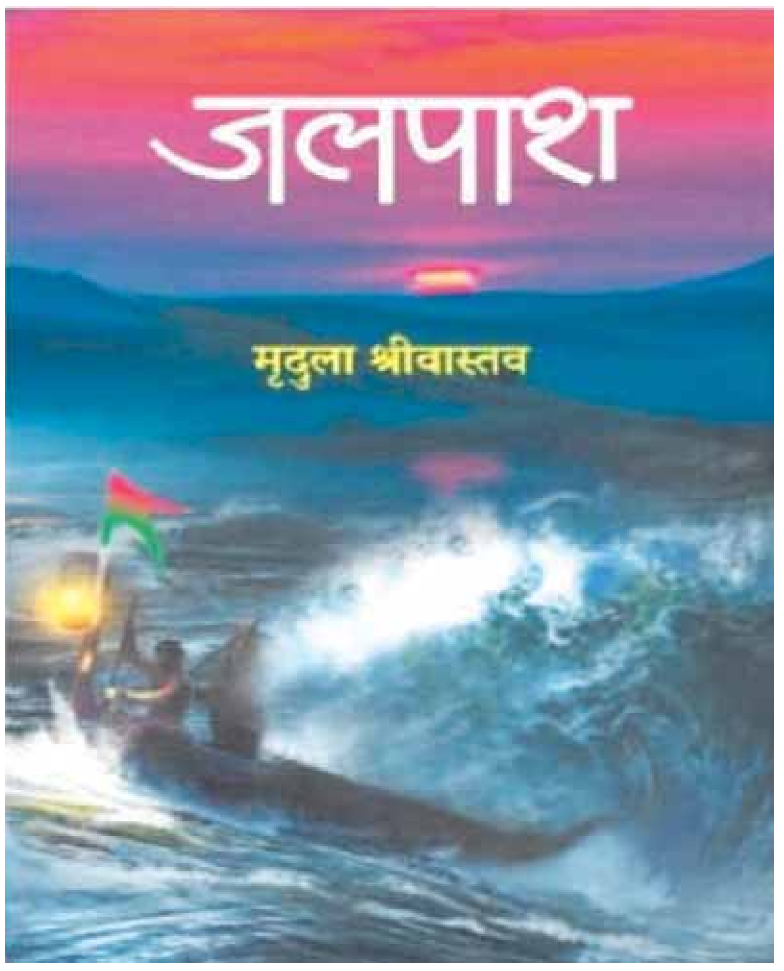

मृदुला श्रीवास्तव का यह कहानी-संग्रह समकालीन हिन्दी कथा-साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि इसमें न केवल ग्रामीण और कस्बाई जीवन की बारीक पड़ताल की गई है, बल्कि समाज के बहुस्तरीय यथार्थ को भी प्रभावशाली ढंग से रूपायित किया गया है। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन या भावनात्मक उथल-पुथल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विमर्शों को भी अपनी कथा में समाहित करती हैं। इन कहानियों में समकालीन भारतीय समाज के अंतर्विरोधों, विडंबनाओं और विसंगतियों को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है। भूमंडलीकरण, बाजारवाद और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जैसे वैश्विक परिवर्तनों ने भारतीय समाज की संरचना और संवेदनाओं पर गहरा प्रभाव डाला है – मृदुला की कहानियाँ इस प्रभाव को कथा-स्तर पर आत्मसात करती हैं। उनका लेखन एक ओर जहाँ नवउदारवादी नीतियों के कारण उत्पन्न सामाजिक विषमता को सामने लाता है, वहीं दूसरी ओर उन वंचित समुदायों की आवाज भी बनता है, जो मुख्यधारा के विमर्शों से अक्सर गायब रहते हैं। कथाकार की दृष्टि व्यापक और समावेशी है। उन्होंने अपने कथा-सूत्रों के माध्यम से न केवल स्त्री और दलित जीवन, बल्कि श्रमजीवी, मेहनतकश, उपेक्षित जनों, ट्रांसजेंडर समुदाय और हाशिए पर खड़े पात्रों की जिंदगियों को भी यथार्थ की जमीन पर उतारा है। ये पात्र किसी भावुकतापूर्ण सहानुभूति के शिकार नहीं हैं, बल्कि वे अपनी जिजीविषा, संघर्ष और चेतना के साथ प्रस्तुत होते हैं। लेखिका की संवेदना एक सक्रिय प्रतिबद्धता के रूप में उभरती है, जो केवल दया नहीं, बल्कि न्याय और बदलाव की आकांक्षा के साथ जुड़ी हुई है।

वे अपनी शैली में कथ्य के अनुरूप विविधता लाती हैं। कभी वह शैली व्यंग्यात्मक हो जाती है, कभी आत्मकथात्मक, तो कभी प्रतीकात्मक। इस बहुरूपता के कारण उनकी कहानियाँ पाठक को न केवल प्रभावित करती हैं, बल्कि उसे आत्ममंथन और सामाजिक समीक्षा के लिए भी विवश करती हैं। इस दृष्टि से देखा जाए, तो यह कहानी-संग्रह न केवल समकालीन हिन्दी कहानी की लोक-जीवन और हाशिए की अस्मिताओं के प्रति एक संवेदनशील हस्तक्षेप है, बल्कि वह साहित्य को समाज के गंभीर प्रश्नों से जोड़ने का सशक्त प्रयास भी करता है। इस कृति में लेखिका की परिपक्वता, उनका सामाजिक सरोकार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। कहानियों की सुंदरता पात्रों के स्वाभाविक विकास में ही निहित है, जहाँ वे अपनी परिस्थितियों से जूझते हैं, निर्णय लेते हैं और पाठक उनसे जुड़ाव महसूस करता है। लेकिन इस संग्रह की कहानियों में लेखिका के अत्यधिक हस्तक्षेप की वजह से पात्रों की स्वाभाविकता दब जाती है। आशा है इस कहानी संग्रह का साहित्य जगत में भरपूर स्वागत होगा।

पुस्तक- जलपाश (कहानी संग्रह)
लेखिका - मृदुला श्रीवास्तव
प्रकाशक - अमन प्रकाशन, कानपुर
मूल्य - 350/- रूपए

कविता

आइए, निंदक बनें

कारुलाल जमड़ा 'कारुण्य'

बरसों बाद
आज अक्ल आई
जब किसी ने पास बैठाकर कहा
देखो! परनिंदा कितनी जरूरी है।

नंबर एक
तुम अपनी पीड़ा कुछ घड़ी के लिए ही सही
भूल जाते हो
तुम भूल जाते हो कि बीबी ने क्या कहा
बच्चों ने क्या रुख दिखाया
और दिन भर लोग क्या बुदबुदाते रहे ?

नंबर दो
जब तुम दूसरों पर नहीं कुढ़ते हो
व्यक्तिगत या समूह में किसी की निंदा नहीं करते हो
तब तुम जाति से स्वतःबाहर हो जाते हो
और कौए तुम्हें संदेहवश कोयल समझकर
लगातार नोंचते रहते हैं ।

नंबर तीन
तुम किसी की ऐसी-तैसी न भी करो
तो भी तुम्हारी होगी ही,
तुम छूट नहीं सकते
इसलिए करो!
परनिंदा में डूबे अनमोल साथियों को खोओ मत
पूरा समूह, सारे निंदक तुम्हारे साथ होंगे
और तुम्हारे साथ होगा बहुमत।

सुनो!
तुम्हारे अच्छा और सच्चा बनने से
कुछ नहीं होने वाला
दुनिया मुंडे देखती है
खोपड़ियां गिनती है
संख्याबल तुम्हारे साथ नहीं है और न ही निन्दा का
शस्त्र

निन्दा में जितना रस है न बंधु
उतना ही वह शस्त्र का काम भी करती है

फेल होने के भय में

हास्य-व्यंग्य

सुरेश सौरभ

जब यह खबर जंगल में लगी आग की तरह फैल गई कि एक दूल्हा सुहागरात वाले दिन अपनी धर्मपत्नी को छोड़कर भाग गया और जब काफी खोजबीन की गई, तब आखिरकार पुलिस ने उस भगोड़े दूल्हे को दूसरे शहर से बरामद कर लिया। जब उससे पूछा गया, आखिर उसने ऐसा क्यों किया, क्या समस्या थी ? तब उसका मासूम सा जवाब था ÷मैं डर गया था और इतना ढेर सारा डर मेरे मन में भर गया था कि कहीं मैं फेल न हो जाऊं।÷ डर उसके चेहरे पर ऐसे झलक रहा था, जैसे हाईस्कूल बोर्ड की परीक्षा में कोई किशोर पहली बार बैठ रहा हो।

जहाँ लाभ है, वहाँ हानि है, जहाँ हानि है, वहाँ लाभ है, पास होना, फेल होना, दुनिया का हमेशा दस्तूर रहा है,पर जब एक दिन, सुहागरात वाली रात को, अगर कोई दूल्हा अपनी नवोढ़ा बेगम को छोड़कर भाग जाता है, तब उसे मीडिया राष्ट्रीय स्तर तक विमर्श का हिस्सा कैसे बना देती है, यह मार्मिक प्रसंग, पहली बार मैं सोशल मीडिया पर अपनी खुली आंखों से देख रहा हूँ, प्रेस वाले किसी राष्ट्रीय आपदा पर इतनी खुलकर चर्चा नहीं करते दिखते, जितनी आज इस विषय पर बड़े जोश में खुलम-खुल्ला चर्चा करते दिख

रहे थे और लोग धड़ाधड़ कमेंट पर कमेंट झोकें जा रहे थे, कुछ जोश-जोश में मैंने भी कुछ कमेंट ठोंक मारे हैं, जैसे हमारे शहर में एक हकीम किरमानी बड़े पहुंचे हुए हकीम है, बड़े-बड़े खून के आंसू रोने वाले लोगों को उन्होंने तमाम खुशियाँ बख्शी हैं। मैं समझता हूं ,किरमानी जैसे नेक शरीफ और बहुत पहुंचे हकीम के खानदानी दवाखाने की, ब्रांच हर जिले में होनी चाहिए, ताकि किसी की बसी-बसायी गृहस्थी बिगड़ने न पाए। फर्जी पर्ची निकालने वाले, पानी बांटने वाले बाबाओं और हकीमों से बचने के लिए यह जरूरी है कि हकीम किरमानी जैसे सौ फीसदी गारंटीशुदा मर्दाना जोश का इलाज करने वाले ,शरीफ, समाज सेवक टाइप के आदमी का प्रचार हम जनहित में करें। मैं देख रहा हूँ कि एक सज्जन ने अपनी संवेदना से भरे कमेंट ठोंके हैं, जिनकी मूल सद्भावना देखिए, शुक्र है दूल्हा पकड़ लिया गया। अपनी दुल्हन के पास वापिस आ गया। कुछ लोग तो अपनी पत्नी को ऐसे छोड़कर भागे कि कभी वापिस ही न लौटे और आज वही बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की ढोल देश भर में पीटते फिर रहे हैं। सच्चे समाज सेवक, भगवान् सेवक बनते फिर रहे हैं।

दोस्ती

आरती चित्तौड़ा, उदयपुर

रितिका अपनी मम्मी के साथ शहर में लगी एग्जिबिशन देखने गई। एक के बाद एक सुंदर कलाकृतियां देखकर उसका मन आनंदित हो रहा था। एक स्टॉल पर जाकर गुमसुम सी रूक गई मम्मी ने पूछा - रितिका क्या हुआ? रितिक ने कहा- मम्मी यह क्या इतनी सारी किताबें के बीच यह रोबोट क्या कर रहा है? इसका यहां क्या काम है? रितिका के मासूम प्रश्न पर मम्मी को भी आश्चर्य हुआ बोली- बेटा आज की युवा पीढ़ी किताबों से दूर हो रही है। सब कुछ मोबाइल से ही तो काम हो रहा है, किताबें तो केवल अलमारी में बंद हो गई है। अभी तुम तो छोटी हो, पर देख किताबों में अथाह भंडार है। हमारी संस्कृति सभ्यता मानवीय भावनाओं का सुंदर चित्रण है। तुझे पसंद है ना कहानियां मैं चंपक पढ़कर तुझे कहानियां सुनाती हूं । चंपक मेरे बचपन की बच्चों की बहुत अच्छी पत्रिका है। हाँ

मम्मी पर इस पेंटिंग में कोई इंसान होना चाहिए था, रोबोट नहीं। हां बेटा लेकिन जिस कलाकार ने यह कृति बनाई है उसने इसमें भविष्य दिखाया है, इसलिए तू हमेशा किताबों से दोस्ती बनाकर रखना.। स्कूल कॉलेज की पढ़ाई करते समय और बाद में भी पढ़ने के लिए समय निकाल लेना, फिर देखना इस तस्वीर में रोबोट नहीं इंसान होगा। रितिक की छोटी बुद्धि ने झट से सिर हिला दिया और कहने लगी - मम्मी यह बात मैं अपनी फ्रेंड्स को भी बताऊंगी।

लोकप्रियता का लिटमस टेस्ट

व्यंग्य

सुरेश उपाध्याय

लेखक इंदौर निवासी व्यंग्यकार हैं।

अपने लोकप्रिय होने का पूर्ण विश्वास उन्हे था। फिर भी स्वयम की संतुष्टी व पुष्टी के लिए लोकप्रियता व अमरता का लिटमस टेस्ट करना उन्हें उचित लग रहा था। यह महत्वपूर्ण कार्य निर्विघ्न व गोपनीय तरीके से कैसे सम्पन्न हो?, इस चिंता में वे लगे रहते थे। किसी से इस विषय पर सलाह ङ्क विमर्श में गोपनीयता भंग होने के खतरे थे। सर्वे एजेंसी से लेकर कई तरह के आइडिया (विचार) उनके मन में आए लेकिन अन्यान्य कारणो यथा लोकलाज, तानाकशी, जगहंसाई आदि के डर उनके अनुप्रयोगो को स्थगित करवाते रहे थे। एक सुप्रसिद्ध व नामचीन हस्ती के दुनिया से प्रस्थान उपरांत आए श्रद्धा सुमनों की खूशबू ने उन्हें लिटमस टेस्ट का एक अनूठा व नवीन आयाम दिखा दिया था। मीडिया व सोशल मीडिया में दिवंगत के गुणों, उपलब्धियों के विवरण उन्हें आल्हादित कर रहे थे। दिवंगत के वैचारिक विरोधी भी महान परम्पराओं का पालन करते हुए उनका यशोगान कर रहे थे तो व्यक्तिगत दुश्मन भी तारिफो के पुल बांध रहे थे। किसी भी विशेषण में कन्ही अतिशयोक्ति नजर नही आ रही थी। पूर्व में की गई आलोचनाओं, अपमान, तिरस्कार को तो जैसे तिलांजली ही दे दी गई थी और उसके लिए पछतावा, संकोच, माफी के कोई शब्द या भाव दूर दूर तक महसूस नही हो रहे थे।

उनकी भी आकांक्षा लोकप्रिय व अमर होने की थी। अपनी नैसर्गिक प्रतिभा का सामर्थ्यपूर्ण दोहन व प्रदर्शन तो उन्होंने किया ही था। इसके विकास व विस्तार के लिए अतिरिक्त जतन भी उन्होंने अथक किए थे। अपने लोकप्रिय होने का पूर्ण विश्वास उन्हे था। फिर भी स्वयम की संतुष्टी व पुष्टी के लिए लोकप्रियता व अमरता का लिटमस टेस्ट करना उन्हें उचित लग रहा था। यह महत्वपूर्ण कार्य निर्विघ्न व गोपनीय तरीके से कैसे सम्पन्न हो?, इस चिंता में वे लगे रहते थे। किसी से इस विषय पर सलाह ङ्क विमर्श में गोपनीयता भंग होने के खतरे थे। सर्वे एजेंसी से लेकर कई तरह के आइडिया (विचार) उनके मन में आए लेकिन अन्यान्य कारणो यथा लोकलाज, तानाकशी, जगहंसाई आदि के डर उनके अनुप्रयोगो को स्थगित करवाते रहे थे। एक सुप्रसिद्ध व नामचीन हस्ती के दुनिया से प्रस्थान उपरांत आए श्रद्धा सुमनों की खूशबू ने उन्हें लिटमस टेस्ट का एक अनूठा व नवीन आयाम दिखा दिया था। मीडिया व सोशल मीडिया में दिवंगत के गुणों, उपलब्धियों के विवरण उन्हें आल्हादित कर रहे थे। दिवंगत के वैचारिक विरोधी भी महान परम्पराओं का पालन करते हुए उनका यशोगान कर रहे थे तो व्यक्तिगत दुश्मन भी तारिफो के पुल बांध रहे थे। किसी भी विशेषण में कन्ही अतिशयोक्ति नजर नही आ रही थी। पूर्व में की गई आलोचनाओं, अपमान, तिरस्कार को तो जैसे तिलांजली ही दे दी गई थी और उसके लिए पछतावा, संकोच, माफी के कोई शब्द या भाव दूर दूर तक महसूस नही हो रहे थे।

अचानक उनका स्वास्थ्य नासाज हुआ और लिटमस टेस्ट के स्वप्न को साकार करने की सम्भावनाए बलवती होती दिखाई देने लगी। चिकित्सकीय परामर्श पर जांच आदि के लिए वे अस्पताल में भर्ती हुए और अस्पताल की यूनिफार्म वाला अपना फोटो उन्होने फेसबुक पर चेप दिया। आभासी दुनिया के मित्रो की स्वाभाविक रुप से व्यक्त चिंताओ व सेहत के लिए शुभकामनाओ ने उन्हे साहस से भर दिया, उनका मनोबल बढाया। जांच रपट के बाद उन्हे सघन चिकित्सा इकाई (आइ सी यू) में शिफ्ट करना पडा था। पूर्व की भांति नियमित सोशल मिडिया बुलेटिन जारी की गई

थी। देखते ही देखते आभासी व वास्तविक मित्रो / परिजनो की चिंताओ व शुभकामनाओ की बाढ सी आ गई थी। लोकप्रिय होने का उनका विश्वास आसमान छूने लगा था। आभासी दुनिया का एक तो यह फायदा है कि नाम, संख्या व संदेश सबके अवलोकनार्थ सुलभ रहते हैं। विशिष्ट व्यक्तियो के साथ के अस्पताल के फोटो शेअर करने की अपनी महत्ता है ही। वास्तविक दुनिया में तो स्वास्थ्य का हालचाल जानने / मिलने वालो का रिकार्ड रखना पडता था और उससे भी दुष्कर था बाद में आने वालो को पहले आ चुके लोगो की जानकारी देना। यह एक तरह की कला मानी जाती थी और कला सब के पास तो सम्भव नही होती है। नैसर्गिक कला अलग से ही पहचानी जा सकती है। जो बहुत करीने से हालचाल पूछने आए सेठो, नेताओ, नामी-गिरामी श्रेष्ठीजनो के नाम धारा प्रवाह आगंतुको को सगर्व सुना देती थी और निहितार्थ का पता ही नही चल पाता था।

उन्हें लगा अब लिटमस टेस्ट का सही समय आ गया है, सो आगंतुकों से मिलने पर प्रतिबंध की तख्ती कमरे के बाहर लगवा दी गई और स्वयम आराम से टेलिविजन देखने में समय बिताने लगे थे। इस प्रतिबंध ने आशंका को जन्म दिया या किसी को शरारत सुझी कि उनकी अंतिम सांस की न्यूज बनी और मिनिटो में ही वायरल हो गई थी। श्रद्धांजली व आरआईपी का तांता लग गया था। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व के लेख तो शायद पहले से ही इस घडी का इंतजार कर रहे थे, देखते ही देखते इनका भी व्यापक प्रसार हो गया था। उनके परिवार के खंडन के शब्द इस क्रंदन में नगाडे की आवाज में तूती (अनसुने) बनकर ही रह गए थे। टी वी चैनल पर यह सब देख वे मंत्रमुग्ध हो रहे थे। लोकप्रियता व अमरता का उनका लिटमस टेस्ट सफल व सार्थक दिखाई दे रहा था कि अचानक मुस्कुराते हुए टेलिविजन देखते हुए उनका फोटो वायरल हो गया। उधर मृत्यू की खबर प्रसारित करने व श्रद्धांजलि देने वाले इसे उम्र बढाने का टोटका निरुपित करने में लग गए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

रोमांसवाद के बाद का समय और कलाकार कुर्बे

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

यथार्थवादी कला पर कलाकार दोमीय लगातार कार्य कर रहे थे। समाज के तमाम कुठाराघातों पर प्रहार भी कर रहे थे। चीजों को आम जनमानस के चश्में से देख रहे थे और व्यंग्यात्मक तरीके से सबके सामने प्रस्तुत भी कर रहे थे। यथार्थता का बोलबाला बढ़ रहा था। कला अब आम जन के बीच आम होकर पहुँचने लगी थी और इन सभी में अब तक ग्युस्ताब कुर्बे जो दोमीय से लगभग दस वर्ष छोटे थे, भी बढ़-चढ़ कर अपने हिस्से का कार्य कर रहे थे। वैसे संघर्ष की शुरुआत भले दोमीय के साथ जुड़ी हो पर यथार्थवाद के प्रणेताओं में सबसे प्रमुख भूमिका निभाने वाला यदि कोई था तो वह ग्युस्ताब कुर्बे ही था, जिनके संघर्ष भी कम नहीं थे। उनके लिए तो सबसे बड़ा संघर्ष कलाकार बनने को लेकर ही था खैर आइए आगे बढ़ते हैं और चलते हैं ग्युस्ताब कुर्बे की ओर।

पूर्वी फ्रांस का वो ग्रामीण क्षेत्र ऑर्नांस जिसके बीच से कल-कल करती हुई, बिल्कुल ही शांत नदी बहा करती थी, घने जंगल, पहाड़, चूना-पत्थर की चट्टानें हरे-भरे पौधे, सुगंधित मिट्टियों से सजे गांव के खेत और खेत पर कार्य करते आम लोग, जहाँ की शोभा हुआ करते थे। भौगोलिक स्थिति को और भी स्पष्ट तरीके से देखा और समझा जाए तो कहा जा सकता है कि ऑर्नांस स्विट्जरलैंड के सीमा क्षेत्र के बहुत ही करीब है इसलिए गाँव की सुंदरता के बारे गहन अध्ययन से ज्यादा बस यही कहा जा सकता है कि स्विट्जरलैंड की छाप स्पष्टतः यहाँ भी दिखाई पड़ती थी। प्राकृतिक छटा के तो कहने ही क्या थे, बखान कितना भी किया जाएगा कम ही रहेगा, प्राकृतिक सौंदर्य ही यहाँ का गहना था हाँ खेती-बाड़ी, पशुओं की देखभाल और छोटे-मोटे व्यापार हर जगह की भांति यहाँ भी आम ही था। लोगों में दुख-दर्द, स्नेह-प्रेम, संघर्ष सब कुछ था और लोगों में अपने परंपरागत चीजों के निर्वाह का दम भी था। यहीं रेजिस कुर्बे एक संपन्न किसान के रूप में लोगों के बीच थे जो खेती-बाड़ी, पशुओं की देखभाल करते हुए सम्मानित सदस्य की भांति अपने कर्तव्य को भली-भांति निबाह रहे थे जिनकी पत्नी सिल्वी ओडॉट धार्मिक, सांस्कृतिक और परिवार का खयाल रखने वाली महिला थी। दोनों ही स्वतंत्र विचार वाले थे और इन्हीं युगल के यहाँ 10 जून 1819 को जन्म हुआ था कलाकार ग्युस्ताब कुर्बे का। कुर्बे कुल चार भाई बहन थे। उनका बचपन इन सभी के साथ खेत-खलिहानों, पगडंडियों, पहाड़ों पर चढ़ने-उतरने और खुले वातावरण में घूमते हुए बीत रहा था। स्वच्छ हवाओं के साथ स्वच्छ विचारों का भी साथ रहा। ग्युस्ताब कुर्बे के इसी संगत का असर रहा कि गाँव उनके साथ, उनके विचारों में हमेशा जिन्दा रहा। आगे चलकर कुर्बे रोम, पेरिस सहित युरोप के और भी कई जगहों पर रहे पर यह जगह (ऑर्नांस) उनके साथ हमेशा रही। कला में रोमांसवाद के विरुद्ध जाकर यथार्थवाद का बीजारोपण भी इसी कारण संभव हो सका। कुर्बे को लगने लगा था कि जब चीजें नैसर्गिक रूप से ही इतनी सौंदर्ययुक्त हैं कि मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रहा जा सकता तो फिर ये बाहरी आडंबर से युक्त प्रकाश, हाव-भाव जैसे तमाम तामझाम का बखेड़ा क्यूं? खैर यथार्थवाद पूरी तरह से इनके ऊपर हॉबी हो पाता इसके पहले जैसा कि सभी के साथ ही होता है कि कुछ समय भटकने का होता है, भटकन यहाँ भी थी।

प्राकृतिक सानिध्य कुर्बे को इतना भा गया था कि किताबी ज्ञान में मन ही नहीं रमता था जबकि वहीं चित्र निर्मिती हेतु जब स्कूल के प्रांगण में बैठाकर प्रकृति को चित्रित करने हेतु शिक्षक द्वारा कहा जाता था तो मन लगाकर घंटों लगा रहता था। शुरू में अध्ययन हेतु इन्हें जहाँ भी भेजा गया वहीं इनका मन नहीं लग सका जबकि कहीं भी चित्र जैसा कुछ दिखता तो चेहरा खिल उठता था। बेसांको महाविद्यालय में अध्ययन का विचार भी इनके मन में नहीं था पर जाना पड़ा। मन मसोस कर किसी तरीके से कुर्बे वहाँ अपने दिन काट रहे थे और इसी का असर भी कहा जा सकता है कि वे विद्रोही स्वभाव के भी हो गये थे। बेसांको जो शिक्षा, सैन्य और प्रशासनिक अध्ययन के साथ ही कला अध्ययन के लिए भी जाना जाता था में कुर्बे अपने मूल अध्ययन को ध्यान न देकर यहानं भी कला में ही ध्यान देने लगे थे। 1664 में स्थापित फ्राँस का पहला सार्वजनिक संग्रहालय बेसांको में ही स्थित रहा और कुर्बे इसे बिल्कुल ही नजदीक से देख पा रहे थे। उनके समय का यह सबसे बड़ा और सम्पन्न कला अध्ययन का केंद्र भी था। यहीं पर उन्हें पुराने कलाकारों की मूल कृतियाँ भी देखने को मिली। समय और मौका मिलते ही कुर्बे इन कृतियों का स्केच बनाते और लगातार अध्ययन किया करते थे। यहीं पर कई कलाकृतियों में उन्हें कुछ आकारों का बिल्कुल ही आदर्शवादी रूप भी देखने को मिला जो वास्तव में इससे बिल्कुल भिन्न था और इन्हीं सब को देखते हुए यथार्थवाद जो इनके नजर में आदर्श से ज्यादा सुन्दर और प्रभावी था को और बल मिला और यहीं से उनके समझ में ये बात आई कि असली सत्य तो प्रकृति ही है, नैसर्गिक ही सब कुछ है बाकी तो बस भ्रम है। अध्ययन हेतु परिवार के तरफ से तमाम प्रयास किए गये, हालांकि पिता जी अपने विचार इनपर थोपने वालों में से नहीं थे पर पिता-पुत्र के बीच के संवाद में कुछ कमी कहा जा सकता है कि बहुत समय बाद उन्हें पता चल सका कि पुत्र मेरा तो बस कला के लिए बना है और बाकायदा कला के अध्ययन हेतु कुर्बे को स्विस चित्रशाला में भेज दिया गया पर समस्या यहाँ भी जस कि तस ही रही वही बालक जो अपने पिता या परिवार वालों से वादा करके आता है कि बस कुछ

वर्षों में ही मैं एक महान कलाकार बनके आप सभी को दिखाऊँगा और तमाम सपनों के साथ जब वो अपने सपनों के हसीन महल में पहुँचता है जहाँ से उसे एक नये उड़ान पर जाने हेतु तमाम चीजों को सीखना है, अपने आप को युद्ध में उतरने से पूर्व वाला दक्ष

योद्धा साबित करना है, वहाँ पहुँच जाने के बाद की खुशी कुर्बे के साथ बहुत दिनों तक नहीं रह सकी और जल्द ही उसे अपने सपनों का धरातल बिल्कुल ही खोखला नजर आने लगा जहाँ पाँव धरने से भी डरने लगा था बालक कुर्बे। स्विस जहाँ रोमांसवाद सहित ऐसे ही तमाम वादों से युक्त कृतियां बनाई, सिखाई जाती थी, जहाँ यथार्थ को हीन और कल्पना को प्रभावशाली समझा जाता था, के वातावरण में एक ऐसा बालक जो प्रकृति के मनोहारी, दृश्यों, भावों, हवाओं और लहरों के बीच रहकर, अनुभूति कर आया हो, जो प्रत्यक्ष जिया हो प्रकृति को वो भला उसके बारे में हीन जैसे शब्द कैसे सुन सकता था। उसने भी नहीं सुना और जल्दी ही मन में विचार लिया कि हो न हो मैं ऐसी कला का पुजारी नहीं बन सकता जहाँ यथार्थता को जगह न हो। कुर्बे वापस अपने पुराने शिक्षा क्षेत्र में भी नहीं जा सकते थे कारण स्पष्ट था कि कला में अध्ययन का निर्णय भी उनका अपना ही था जिसमें समस्या उत्पन्न होने पर भी वो परिवार को नहीं कोस सकते थे फलतः बीच का रास्ता निकालते हुए कुर्बे लूव्र संग्रहालय जाने लगे और वहीं बैठकर शांति से वहाँ लगे पुराने कलाकारों जैसे देलाक्रा, रेम्ब्रा के कृतियों को निरंतर निहारा करते थे, अध्ययन और अनुकृति भी बनाते थे। धीरे-धीरे कुर्बे अपने कार्यों में धार ला रहे थे और तीन-चार वर्षों के अध्ययन के बाद उनकी कृति 'कुत्ते के साथ चित्रकार कुर्बे ' का चयन राष्ट्रीय प्रदर्शनी के लिए हुआ जिससे प्रभावित होकर फिर वो और भी प्रयोग करने लगे थे। सन 1849 में उनका एक 'आत्मचित्र' तथा दूसरा चित्र 'ऑर्नांस का भोजन' फिर से चयनित हुआ जिसमें कृति 'ऑर्नांस का भोजन' पुरस्कृत भी हुई। पुरस्कृत होते ही कुर्बे को अब किसी भी राष्ट्रीय प्रदर्शनी में अपने चित्र बिना चयन समिति के स्वीकृत के भी

प्रदर्शित करने का मौका मिल गया था जिसके फलस्वरूप एक वर्ष बाद के प्रदर्शनी में कुर्बे की कृति ओर्नांस में एक दफन (A Burial at Ornans)' प्रदर्शित हुई, जो ऐतिहासिक सिद्ध हुई। कहानी कुछ इस तरह से है कि यथार्थ को मानने वाला कुर्बे पहले से ही था, बाहरी आडंबर उसे पसंद नहीं थे। अपने ही दादा (संभवतः) के अंतिम संस्कार के दृश्य को उसने इस कृति में उतारा, जिसमें कुछ भी बनावटी नहीं थी, कोई भी विशेष तत्व नहीं। बस जैसा दिखा, जिस रूप में दिखा उसी को फलक पर रख दिया गया हो जैसे। गहरे रंगों के वितान से झाँकते ग्रामीण लोग, ग्रामीण परिवेश जैसी और भी कुछ चीजें जो उस समय के गैलरियों में मान्य नहीं थे। किसी हाई-टेक पार्टी में बिल्कुल मिट्टी से सने किसी बुजुर्ग ग्रामीण का पहुँच जाना सा हो गया था उस प्रदर्शनी में कुर्बे का यह चित्र। चयन समिति को कतई पसन्द नहीं था ये चित्र बावजूद इसके चित्र वहाँ प्रदर्शित हुआ, अपना प्रभाव भी छोड़ा। कृति में आदर्शवादी तत्व, भाव-भंगिमा जैसा कुछ भी नहीं था। था वही जो वहाँ का हाजिर था। इस कृति ने तो जैसे क्रांति ला दी हो। बड़े फलक पर अपने आपको पा कर आम जन मानस भी कुर्बे के साथ हो लिया था। रोमांसवाद के अंत का कारण भी कहा जा सकता इस कृति को। कुर्बे खुद ही कहा करते थे कि ये कृति रोमांसवाद का दफन सिद्ध होगी। चित्र साभार गूगल से है।

डिटवा चक्रवात की आहट के बीच दक्षिण यात्रा

यात्रा संस्मरण

मोहन वर्मा

आतिफ़ रब्बानी

दक्षिण भारत के चैन्नई, महाबलीपुरम, पांडिचेरी, चिदंबरम,पिचावरम और कांजीवरम के साथ अंडमान निकोबार की यात्रा 29 नवंबर से 09 दिसंबर तक तय हुई।28 को समाचार पत्रों और न्यूज चैनलों ने खबर दी कि डिटवा चक्रवात के श्रीलंका में तबाही मचाने के बाद ये चक्रवात महाबलीपुरम और पांडिचेरी की तरफ बढ़ेगा और उन्हीं दिनों में हमारी यात्रा इनजगहों की थीं ।दनादन फ्लाईटे कैंसल होने की ख़बरें आ रही थी।बहरहाल फ्लाईट कैंसल भी नहीं हुई और हम निर्धारित समय पर 29 की रात चैन्नई भी आ पहुँचे।

इस बार जब मित्रों संग अगले पर्यटन टूर की हम प्लानिंग कर रहे थे तो ये पता नहीं था कि ये यात्रा इस बार इस माने में अविस्मरणीय हो जायेगी कि हम दक्षिण भारत की इस यात्रा में समय समय पर समुद्री क्षेत्रों में आने वाले चक्रवात के साक्षी भी बन सकेंगें, मगर ये हो न सका, क्योंकि आपदा का तूफान दुम दबाता नजर आया ।

दक्षिण भारत के चैन्नई, महाबलीपुरम, पांडिचेरी, चिदंबरम,पिचावरम और कांजीवरम के साथ अंडमान निकोबार की यात्रा 29 नवंबर से 09 दिसंबर तक तय हुई। 28 को समाचार पत्रों और न्यूज चैनलों ने खबर दी कि डिटवा चक्रवात के श्रीलंका में तबाही मचाने के बाद ये चक्रवात महाबलीपुरम और पांडिचेरी की तरफ बढ़ेगा

और उन्हीं दिनों में हमारी यात्रा इनजगहों की थीं । दनादन फ्लाईटे कैंसल होने की ख़बरें आ रही थी। बहरहाल फ्लाईट कैंसल भी नहीं हुई और हम निर्धारित समय पर 29 की रात चैन्नई भी आ पहुँचे।

30 की सुबह से चक्रवात के श्रीलंका में तबाही मचाने और चैन्नई,पांडिचेरी पहुँचने की ख़बरें चैनलों पर शुरू होने के साथ ही परिजनों और शुभ चिंतकों के फोन आना शुरू हो गए । इधर चैन्नई में मरीना बीच से लेकर शहर भर में सब कुछ सामान्य था।हाँ अलर्ट के चलते बीच पर पोलिस पेट्रोलिंग के साथ दुकानें एहतियातन बन्द थी ।

पर्यटक के रूप में चैन्नई के मायलापुर के कपालीश्वर मन्दिर दर्शन, संग्रहालय, चर्च,फोर्ट देखने के बाद कारवा महाबलीपुरम पहुंचा। होटल, बीच से मात्र एक फर्लांग दूर था जहाँ डिटवा तूफान की आहट के बावजूद लोग सूर्यास्त के सुनहरे पलों में समुद्री लहरों और अठखेलियों का आनंद ले रहे थे।इधर चैनलों पर चक्रवात की खबरें जारी थी । 01 दिसंबर को महाबलीपुरम की खुशगवार सुबह में नाश्ते के बाद हम सब रिमझिम बारिश के साथ साथ महाबलीपुरम के पर्यटन स्थल बटर बॉल,यूनेस्को वर्ल्ड हैरिटेज,पंचरथ,अर्जुन काल के ओपन एयर रॉक्स एंड केवस् को देखने के बाद मौसम का आनंद लेते हुए हम पहुँचे पांडिचेरी । अलर्ट की खबरों के बावजूद सब कुछ सामान्य मिला।यहाँ तक की मौसम भी खुशगवार ही मिला। महर्षि अरविंद के अन्तरराष्ट्रीय आश्रम ओराविले से होते हुए समुद्री तट के समीप होटल पहुँचे । शाम देर तक पांडिचेरी के समुद्री तट पर लहरों की अठखेलियाँ देखते रहे और आनंद लेते रहे।

2 से 4 दिसंबर तक एक बार फिर भारी बारिश की चेतावनी के बाबजूद हम लोग 3 दिसंबर तक भी पांडिचेरी की खूबसूरती और संस्कृति से रूबरू होते रहे और शहर स्थित रॉक बीच से लेकर ईडन बीच, पैराडाईज बीच पर लहरों की अठखेलियों का मजा लेते रहे । हाँ पूरी यात्रा के दौरान कहीं रिमझिम तो कहीं धीमी तेज बारिश से चक्रवात की आहट सुनाई देती रही ।

चिदंबरम में शिव नटराज का वैभवशाली प्राचीन मंदिर और पिचावरम में मेंगरु फॉरेस्ट बैक वॉटर के बीच नौका विहार के अनूठे अनुभव के बाद कांचीपूरम में कैलाश नाथ शिव मन्दिर,कामाक्षी अम्बर देवस्थानम और अरूलमिगु देवराजास्वामी देव देवस्थानम के प्राचीन वैभवशाली मन्दिरों के दर्शनों पश्चात चैन्नई पहुंचकर यात्रा का पहला पड़ाव पूरा हुआ । सहयात्री विजय श्रीवास्तव, अजय सोलंकी और राहुल परमार के साथ ने यात्रा को अविस्मरणीय बना दिया ।

गड्ड-मड्ड पटकथा के कारण उलझी एक वेब सीरीज

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

जिद्दी इश्क एक रोमाण्टिक-थ्रिलर वेब सीरीज है जिसकी समीक्षा में मिली-जुली प्रतिक्रियाएं सतह पर आ रही हैं । कुछ समीक्षक इसकी कहानी और अदिति पोहनकर की 'आश्रम ' जैसी भूमिका की आलोचना करते हुए इसे औसत दर्जे की सिरीज़ बता रहे हैं तो कुछ ने इसमें प्रेम, जुनून और प्रतिशोध जैसे भावनाओं के जटिल मिश्रण की प्रशंसा की है। एकतरफा प्यार की ताकत ही कुछ और होती है। फिल्मकार करण जौहर ने अपनी फिल्म -' ऐ दिल है मुश्किल में ' कुछ इसी अन्दाज़ में एकतरफा प्यार को रोमांटिसाइज किया था और अब इसी जुनूनी प्यार की नई बानगी है, यह वेबसिरीज । अफसोस यही है कि अदिति पोहनकर का यह एकतरफा जिद्दी इश्क गड्ड-मड्ड पटकथा और खराब प्रस्तुतीकरण के चलते इतना ताकतवर नहीं बन पाया कि दिल को छू सके।

यह सिरीज़ इसके निर्देशक और क्रिएटर राज चक्रवर्ती की ही चर्चित बंगाली फिल्म परिणीता की हिंदी रीमेक है, जो मेहुल बोस (अदिति पोहनकर) नामक लड़की की कहानी है। मेहुल बचपन से अपने पड़ोसी और ट्यूटर शेखर दत्ता (परमव्रत चटर्जी) की दीवानी है। जबकि, शेखर अपनी सहकर्मी सायन्तिका (रिया सेन) से प्यार करता है। मेहुल इस रिजेक्शन से जूझ ही रही होती है कि शेखर की आत्महत्या की खबर उसे तोड़ देती है। शेखर पर मोलेस्टेशन का आरोप लगा होता है, जिसे मेहुल मानने को तैयार नहीं होती। इसलिए, वह सच की पड़ताल में जुट जाती है। शेखर पर लगे आरोपों की सचाई क्या है और इसके लिये मेहुल की जुनूनियतके आसपास ही यह सिरीज़ चलती रहती है। असल में यह कहानी एक कच्ची, नाजुक और पूरी तरह से अपने एकतरफा प्यार में डूबी टीनेज लड़की की कहानी है। कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है उसका प्यार गहरा और खतरनाक होता जाता है, जहाँ धीरे-धीरे बदला और नफरत भरे इमोशंस भी नजर आने लगते हैं।

कहानी में प्यार, दर्द, धोखा, सस्पेंस और बदले जैसे कई संवेदनशील मसले हैं, मगर खराब पटकथा के कारण कोई भी इमोशन उभरकर नहीं आ पाता है। अतीत और वर्तमान के बीच फ्लैशबैक में कहानी का बार-बार आगे-पीछे जाना सस्पेंस और रोमांच को बनाए रखने में बाधा डालता है।अभिनय का जहाँ तक सवाल है मेहुल की केन्द्रीय भूमिका में अदिति पोहनकर की भूमिका को एक तरफ़ा प्यार के जुनून के रूप में सराहा गया है, लेकिन उनके अभिनय को कुछ आलोचकों ने अटपटा भी बताया है । अन्य कलाकारों, जैसे सुमित व्यास और रिया सेन, को भी बहुत प्रभावी नहीं माना गया। हालांकि, परमब्रत चटर्जी और प्रियांशु पैन्यूली ने अपनी-अपनी भूमिका में दम दिखाया है ।

कोलकाता और पहाड़ों के खूबसूरत लोकेशन ने दर्शकों को सुकून दिया है। सिरीज़ एकतरफा

प्यार और बदले की भावना को दर्शाती है, जो इसे एक डार्क और इंटेंस अनुभव बनाती है। अगर आप बिना कुछ खास उम्मीदों के वक्त बिताना चाहते हैं तो इसे देख सकते हैं, वरना कुछ खास मिस नहीं करेंगे। हालांकि, जिन लोगों को ऐसी कहानियों में रुचि है, वे इसे एक बार जरूर देख सकते हैं। सिरीज़ में प्यार से शुरू हुआ खेल मौत के खेल तक पहुँचता है । मेहुल के मन में भी यह सवाल उठता है कि कहीं ये प्यार एकतरफा रह गया तो? और आगे जो झलक दिखाई गई है वो बदले की उस आग की झलक दिखाती है जहाँ अपने एकतरफा प्यार के खातिर मेहुल किसी की जान तक लेने के लिए तैयार है। गड्ड-मड्ड पटकथा से और आप उम्मीद भी क्या करेंगे ?

भोपाल शहर युवा कांग्रेस अध्यक्ष मामले में नया विवाद

जिसे नया अध्यक्ष बनाया, उसके विरुद्ध महिलाओं का प्रदर्शन, रेप का आरोपी बताया

भोपाल (नप्र)। मप्र यूथ कांग्रेस के भोपाल (शहरी) जिले में अध्यक्ष पद को लेकर चल रहा विवाद नए रूप में सामने आ गया है। जिस युवा कांग्रेसी को कल यूथ कांग्रेस ने शहर अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी, उसके खिलाफ शनिवार को महिलाओं ने प्रदर्शन करते हुए रेप का आरोप लगाया। राहुल गांधी के नाम का बैनर लेकर कांग्रेस कार्यालय पर प्रदर्शन कर रहीं महिलाओं ने मांग की कि उसे खत्री से बचाया जाए। नेशनल यूथ कांग्रेस ने शहर युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष अंकित दुबे को तत्काल प्रभाव से हटाने और चुनाव में फर्स्ट रनर-अप रहे अमित खत्री को कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त करने का निर्णय लिया था। यह फैसला राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा की गई जांच रिपोर्ट के आधार पर लिया गया, इसके चंद घंटों बाद नया विरोध सामने आ गया है।

जांच समिति ने दोनों पक्षों से की थी पूछताछ– 14 नवंबर को मामले में राष्ट्रीय महामंत्री स्मृति रंजन और लिलिन प्रसाद भोपाल पहुंचे थे। उन्होंने शिकायतकर्ता अमित खत्री, और निर्वाचित जिलाध्यक्ष अंकित दुबे दोनों के बयान लिए और सभी संबंधित दस्तावेज व आपत्तियां देखी। जांच समिति ने करीब एक सप्ताह तक रिकॉर्ड खंगाले और राष्ट्रीय नेतृत्व को रिपोर्ट भेजी। रिपोर्ट में कहा गया कि अंकित दुबे के खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले लंबित पाए गए, जो संगठन की छवि और नियमों के विरुद्ध हैं। इसके चलते उन्हें अध्यक्ष पद पर बने रहना उचित नहीं है। यही रिपोर्ट उनके हटाए जाने का आधार बनी।

परिणाम आने के बाद ही विवाद शुरू

भोपाल यूथ कांग्रेस के चुनाव के दौरान अंकित दुबे पहले स्थान पर आए थे। अमित खत्री दूसरे स्थान (फर्स्ट रनर-अप) पर रहे थे। लेकिन परिणाम घोषित होते ही विवाद खड़ा हो गया।अमित खत्री ने लिखित शिकायत कर आरोप लगाया कि दुबे ने चुनाव नामांकन में अपने लंबित आपराधिक मामलों की सही जानकारी नहीं दी। कई धाराओं के केस होने के कारण वे पात्रता मानदंड पूरा नहीं करते। जिला संगठन की गतिविधियों में अनुशासनहीनता और दबाव बनाने जैसी शिकायतें भी की गईं थीं। इन शिकायतों को देखते हुए राष्ट्रीय समिति ने जांच का निर्णय लिया था।

बाबा साहेब के अनुयायियों ने महापरिनिर्वाण दिवस पर अंकुरित आहार किया वितरित

बैतूल। भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर शनिवार सुबहनगर पालिका से सेवानिवृत्त ऑडिटर बंटी वासनिक के नेतृत्व में उनके साथियों द्वारा जिला चिकित्सालय पहुंचकर सुबह मरीजों एवं उनके परिजनों को अंकुरित आहार वितरित किया। इसके बाद बाबा साहेब अंबेडकर चौक पहुंचकर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। श्री वासनिक ने कहा कि आज भी बाबा साहब के विचार प्रासंगिक है। इस मौके पर श्री वासनिक के साथी फिल्म डायरेक्टर अक्षय गोठी और ऐडवोकेट सुखराम पंडाग्रे ने कहा कि संविधान शिल्पी, आधुनिक भारत की नींव रखने वाले कानूनविद, आजाद भारत के पहले कानून मंत्री डॉ. भीमराव आंबेडकर, जिन्हें पूरी दुनिया सम्मान के साथ बाबा साहब के नाम से पुकारती है। वह अपने युग के सबसे ज्यादा पढ़े लिखे राजनेता और एवं विचारक थे। 1990 में उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया है। बंटी वासनिक और अक्षय गोठी ने कहा कि बाबा साहब अपने जीवन में तीन गुरुओं से कामयाब हुए। उन्होंने जिन तीन महान व्यक्तियों को अपना गुरु माना, उसमे उनके पहले गुरु थे, तथागत गौतम बुद्ध, दूसरे थे संत कबीर और तीसरे गुरु थे महात्मा ज्योतिराव फुले। इस अवसर पर संतोष वाघमारे, दिनेश उइके, दिनेश खातरकर, रामदास पाटील, अशोक निरापुरे, कृष्णा पांसे, श्री मासोदकर, जासूराम गोरस्कर, नरेन्द्र कसावरे सहित कई अधिवक्तागण मौजूद थे।

नीली झंडी दिखाकर किया रवाना– इस अवसर पर भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर के अनुयायियों का एक दल गया बुद्ध के लिए रवाना हुआ। जिन्हें श्री वासनिक ने नीली झंडी दिखा कर रवाना किया। गौरतलब है कि पेंशनर संगठन द्वारा बंटी वासनिक और अक्षय गोठी के विशेष मौजूदगी में बाबा साहब को याद किया।

एसपी ने बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मनाई पुण्यतिथि

बैतूल। 6 दिसंबर को डॉ. भीमराव आंबेडकर (बाबासाहेब) की पुण्यतिथि (महापरिनिर्वाण दिवस) के रूप में मनाई गई। जो उनके समाज सुधार, कानून और संविधान निर्माण के योगदान को याद दिलाता है। इस अवसर पर अम्बेडकर

चौक बैतूल में बाबा साहब की प्रतिमा पर विभिन्न गणमान्य लोगो द्वारा माल्यार्पण किया गया। इसी तारतम्य में एसपी बैतूल वीरेंद्र जैन ने भी अंबेडकर चौक पहुंचकर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस कार्यक्रम में पुलिस अधीक्षक बैतूल वीरेंद्र जैन के साथ अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

भव्य रामकथा 19 दिसम्बर से बैतूल में

राम जन्मभूमि न्यास के पूर्व अध्यक्ष डॉ. रामविलास जी वेदांती आएंगे बैतूल

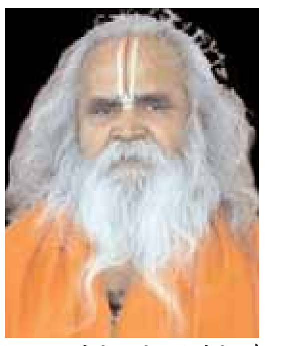

बैतूल। पिछले दिनों अयोध्या में रामलला के विश्व प्रसिद्ध मंदिर में धर्मध्वजा की स्थापना के साथ ही कार्य पूर्ण हुआ। इसके साथ ही लगभग 5 सौ साल का कलंक राम भक्तों के माथे से मिटा और सनातनी गौरव के युग का शुभारंभ भी हुआ। इसी तारतम्य में अयोध्या से रामलला मंदिर की धर्म ध्वजा लेकर राम जन्मभूमि न्यास के पूर्व अध्यक्ष डा. रामविलास वेदांती मध्यप्रदेश के बैतूल में पधार रहे हैं और धर्म ध्वजा के साथ उनकी प्रथम कथा भव्य स्तर पर बैतूल जिला मुख्यालय में 19 से 25 दिसंबर को शिवाजी आडिटोरियम, स्टेडियम के पास होने जा रही है। इस संबंध में बैठक का आयोजन गत दिन ओपन ऑडिटोरियम में किया गया। इस दौरान समाजसेवी प्रशांत गर्ग, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे और समाजसेवी व गौभक्त गिरीश खंडेलवाल विशेष रूप से उपस्थित थे। बैठक में श्री रामलला रामकथा आयोजन समिति का गठन भी किया गया है। इसका संरक्षक भाजपा प्रदेशाध्यक्ष और बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल को बनाया गया। समिति के संयोजक संजय शुक्ला पप्पी ने बताया कि समाजसेवी सुनील व्दिवेदी, गौ सेवा समिति के बलराम जसूजा-हरीश गढ़ेकर-दीपक पाल, विजय हारोड़े, रोशनलाल मोखडे आदि के मार्गदर्शन में यह अभूतपूर्व आयोजन किया जा रहा है। समिति के अनुसार 17 दिसंबर की शाम को परमपूज्य वेदांती जी महाराज का बैतूल आगमन होगा। जिन्हें रेलवे स्टेशन से हाउसिंग बोर्ड गंज स्थित संत निवास तक गाजे बाजे के साथ लेकर जाएगे। 18 दिसंबर को दोपहर 1 बजे सभी रामभक्त महिला पुरूष न्यू बैतूल स्कूल ग्राऊंड में एकत्रित होंगे। यहां हनुमान मंदिर से धर्म ध्वजा यात्रा और कलश यात्रा धूमधाम से निकलेगी। जो थाना चौक, लल्ली चौक, बस स्टैंड, राजा भोज चौक, शिवाजी चौक होते हुए शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम पहुंचेगी। यहां धर्मध्वजा की अस्थाई स्थापना की जाएगी। इसके बाद सभी कलश और धर्म ध्वजा की सामूहिक आरती होगी। 19 दिसंबर से 24 दिसंबर तक लगातार 6 दिन रामलला रामकथा संत रामविलास वेदांती जी के श्रीमुख से दोपहर 2 से 6 बजे तक होगी। 25 दिसंबर को समापन कार्यक्रम में कथा सुबह 11 बजे से 2 बजे तक और इसके बाद हवन व भंडारा होगा। शाम को धर्म ध्वजा की स्थापना राम मंदिर में होगी। आयोजन समिति की बैठक में उपरोक्त अतिथियों के अलावा जयदीप रूनवाल, पिंकी भाटिया, गौभक्त गिरीश खंडेलवाल, डा. ललित सरले, राजेश चौहान, नरेश टंडन, अनिकेत सन्नी मानव, सुधीर उमप, दीप मालवीय, प्रमेश राजपूत सहित महिला समाजसेवियों में श्रीमती वंदना कुंभारे, श्रीमती निमिषा पप्पी शुक्ला, तूलिका पचौरी, प्रमिला सिमैया, सुशीला बोडखे आदि मौजूद रहे। समिति ने सभी रामभक्तों से इस भव्य धार्मिक आयोजन में बढ़-चढ़कर शामिल होने की अपील की है।

मध्य रेलवे के स्टेशन मास्टरों के शोषण मामले में श्रम मंत्रालय सख्त

दो दिनों में कार्रवाई कर रिपोर्ट जमा करने का आदेश

बैतूल। भारतीय रेलवे में एवं विशेष रूप से मध्य रेलवे के नागपुर मंडल में स्टेशन मास्टरों और अन्य रेलकर्मियों के शोषण, अमानवीय कार्य परिस्थितियों तथा श्रम कानूनों के उल्लंघन संबंधी शिकायतों पर श्रम मंत्रालय, भारत सरकार ने त्वरित और कठोर कार्रवाई शुरू कर दी है। उल्लेखनीय है कि इस मामले में बैतूल के पूर्व स्टेशन मास्टर वीरेंद्र कुमार पालीवाल शिकायतकर्ता एवं पूर्व परिवहन निरीक्षक ए के कटारे सह शिकायतकर्ता हैं। स्टेशन मास्टरों के मानवाधिकारों की अनदेखी के संबंध में प्राप्त शिकायत पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने गंभीर संज्ञान लेते हुए चेयरमेन रेलवे बोर्ड और मुख्य श्रमायुक्त नई दिल्ली (श्रम मंत्रालय) को गत 27 अक्टूबर 25 को चार सप्ताह के भीतर एक्शन टेकन रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश जारी किए थे। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के निर्देशों के अनुपालन में, श्रम मंत्रालय, नई दिल्ली ने उप श्रमायुक्त (नागपुर) को मामले की जांच कर एक्शन टेकन रिपोर्ट निर्धारित समय-सीमा में प्रस्तुत करने को कहा था। तथापि, रिपोर्ट समय पर प्राप्त नहीं होने पर श्रम मंत्रालय ने अब मोस्ट अर्जेंट श्रेणी में दिनांक 5 दिसंबर 25 को नया निर्देश जारी कर उप श्रमायुक्त नागपुर को दो दिनों के भीतर एक्शन टेकन रिपोर्ट अनिवार्य रूप से जमा करने का आदेश दिया है। उल्लेखनीय है कि शिकायतों में आरोप लगाया गया था कि भारतीय रेलवे में खास रूप से मध्य रेलवे के नागपुर मंडल में स्टेशन मास्टरों से अत्यधिक कार्य-घंटे लिए जा रहे हैं, वंही स्टाफ की कमी के कारण सुरक्षा एवं संचालन प्रभावित हो रहा है, तथा श्रम कानूनों, भारत सरकार के आदेशों एवं रेल मंत्रालय के दिशा-निर्देशों का पालन नहीं किया जा रहा है, इसके अलावा कर्मचारियों के मूलभूत मानवाधिकारों की उपेक्षा भी की जा रही है।

इनका कहना है –

मुझे अभी इस संबंध में पूरी जानकारी नहीं है। मैं संबंधित विभाग से जानकारी लेकर ही इस संबंध में आपको कुछ बता पाऊंगा।

– अमन मित्तल, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, रेल मंडल नागपुर

एवीबीपी नेता का अश्लील वीडियो,फोरेंसिक जांच रिपोर्ट में फर्जी पाया

भोपाल (नप्र)। अनूपपुर जिले में संघ के अनुषांगिक छात्र संगठन एबीवीपी से जुड़े युवा नेता का बताकर एक वीडियो वायरल किया जाने लगा। इस वीडियो में युवा नेता आयुष राय को खुले में अश्लील हरकत करते दिखाया गया। अब फोरेंसिक जांच रिपोर्ट में ये वीडियो फेंक बताया गया है।

आयुष का बताकर वीडियो अपलोड किए– 20 अगस्त को कोतमा के आयुष ने अमरकंटक थाने में शिकायत की कि स्थानीय युवक ने अपने वेब पोर्टल और यूट्यूब चैनल में आयुष का बताकर वीडियो अपलोड किए हैं। वीडियो में उसे अश्लील हरकत करते दिखाया गया है। फेसबुक आईडी चलाने वाले एक युवक रामबाबू चौबे ने भी अपने अकाउंट से पोस्ट कर लिखा– 'श्रीराम के नाम गमछा बिछाकर अवैध कृत्य किया जा रहा है। हिंदू समाज को आहत कर रहा है।' आयुष ने वीडियो को फर्जी बताया और पुलिस से जांच और कार्रवाई की मांग की।

राजनीतिक दुश्मनी निकालने के लिए फर्जी वीडियो– आयुष ने पुलिस को बताया कि वह एबीवीपी का जिला संयोजक है, ऐसे में विरोधी राजनीतिक गुट के लोग उससे वैमनस्यता रखते हैं। राजनीतिक दुश्मनी निकालने के लिए उन्होंने फर्जी वीडियो का सहारा लिया। फोन करके चेतावनी देने के बाद भी उन्होंने ये वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किए।

ऐसे वीडियो से खुदकुशी कर लेते हैं लोग

रिपोर्ट आने के बाद आयुष मीडिया से कहा इस डीपफेक वीडियो के कारण मेरी छवि खराब हुई। मैं पत्रकारिता का विद्यार्थी हूं। पीजी कर रहा हूं। मेरी पढ़ाई पर असर पड़ा। मेरे परिवार की सामाजिक छवि खराब हुई। मेरे पिताजी को मानसिक आघात सहना पड़ा। ऐसे फेक वीडियो के कारण कई लोग खुदकुशी कर लेते हैं। इसे सहन करना आसान नहीं है।

सांसद अशोक सिंह ने कहा- सरकार संज्ञान ले, खाद्य सुरक्षा मानकों पर जीरो टालरेंस रखे

राज्यसभा में गूंजा 'वीआईटी यूनिवर्सिटी मारपीट' का मुद्दा

भोपाल (नप्र)। सीहोर जिले के वीआईटी विश्वविद्यालय में छात्रों को धमकाने के बाद यहां हजारों छात्रों द्वारा की गई मारपीट और आगजनी का मामला राज्यसभा में गूंजा है। राज्यसभा सदस्य अशोक सिंह ने उच्च सदन में यह मामला उठाते हुए कहा कि वे यह मांग करते हैं कि इस मामले में सरकार संज्ञान ले और खाद्य सुरक्षा उल्लंघनों पर जीरो टॉलरेंस नीति रखे, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

राज्य सभा सभापति दिनेश वर्मा की मौजूदगी में सांसद अशोक सिंह ने अपने वक्तव्य में राज्यसभा में कहा कि 25 नवम्बर को भोपाल वीआईटी में हुई यह घटना एक गंभीर चेतावनी है। इस विश्वविद्यालय में स्वच्छ पानी और स्वच्छ भोजन नहीं मिलने से चार हजार विद्यार्थी बीमार हुए हैं। इस विश्वविद्यालय में खाद्य सुरक्षा और मानकों के आधार पर यहां बच्चों को भोजन नहीं मिल रहा है। अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि समय पर जांच करें। उन्होंने कहा कि विश्व विद्यालयों में कैंटीन लाइसेंस के बाद नाम मात्र व्यवस्था का पालन होता है। वीआईटी सीहोर मामले में प्रबंधन का भी तानाशाही रवैया है जो जांच में सामने आया है। विश्वविद्यालय प्रबंधन छात्रों को दबाकर ऐसे मामले छिपाकर रखता है। विश्वविद्यालय में हुई यह कोई अकेली घटना नहीं है। इसके पहले तेलंगाना, राजस्थान में भी ऐसे मामले सामने आ चुके हैं।

कार्रवाई तभी की जाती, जब छात्र अस्पताल पहुंच जाते– सांसद अशोक सिंह ने वीआईटी की घटना को लेकर कहा कि स्थिति यह है कि कार्रवाई तभी की जाती है जब छात्र अस्पताल पहुंच जाते हैं। ऐसे मामलों में थर्ड पार्टी आडिट की तत्काल आवश्यकता है और यह कागजी कार्यवाही तक सीमित नहीं रहना चाहिए। जल की गुणवत्ता, भोजन सामग्री, कच्चे माल सप्लाई, चेन में पारदर्शिता जरूरी है। भारी भरकम फीस वसूलने वाले ऐसे संस्थानों पर जीवन की बुनियादी जरूरतों के साथ समझौता नहीं करने दिया जा सकता। इन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। वे सरकार से आग्रह करते हैं कि इस मामले में संज्ञान लें। उन्होंने यह भी कहा कि ये मामला हमारे संस्थागत ढांचे की विफलता को उजागर करता है। सिंह ने सदन के माध्यम से मांग की है कि इस मामले में सरकार संज्ञान ले और खाद्य सुरक्षा उल्लंघनों पर जीरो टॉलरेंस नीति रखे।

अकाउंटेंट ने किया सुसाइड

लिखा- 'पापा, माफ़ कर देना, बीमारी के चलते जान दे रही हूं, अब और सहन नहीं होता

भोपाल(नप्र)। भोपाल के कोलार इलाके में रहने वाली युवती ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। वह मदर टेरेसा स्कूल में अकाउंटेंट थी। पुलिस को उसके पास से सुसाइड नोट मिला है। जिसमें उसने बीमारी के चलते जान देने की बात लिखी है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना शुक्रवार की रात दस बजे की है। शनिवार की दोपहर को पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

पुलिस के मुताबिक न्यू ओम नगर में रहने वाली 27 वर्षीय सुजाता खंडाले मदर टेरेसा स्कूल में अकाउंटेंट थी। शुक्रवार को ही उसका जन्मदिन था और इसी दिन उसने सुसाइड कर लिया। युवती ने अपने घर में फांसी लगा ली थी। इसके बाद परिजन उसे फंदे से उतारकर अस्पताल लेकर पहुंचे थे, जहां कुछ देर बाद ही डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

एएसआई मनोज नागवंशी के मुताबिक मृतका के पास से सुसाइड नोट मिला है। जिसमें उसने बीमारी से तंग आकर जान देने की बात लिखी है। हालांकि यह साफ नहीं हो सका है कि उसे बीमारी क्या थी। एएसआई ने बताया कि फिलहाल परिजनों के डिटेल बयान दर्ज नहीं किए जा सके हैं।

मां-पिता को लिखा सॉरी– मृतका ने सुसाइड नोट में मां पिता सहित सभी परिजनों से माफी मांगी है। उसने लिखा की मेरी मौत की जिम्मेदार मैं ही हूं।

मुनि श्री प्रणूत सागर जी मुनिराज का ससंघ धार नगर में मंगल प्रवेश

धार। धार दिगंबर जैन समाज में गणाचार्य विरागसागरजी मुनिराज चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागरजी के परम प्रभावक शिष्य 108 श्री प्रणूत सागर जी महामुनिराज का ससंघ धार नगर में मंगल प्रवेश हुआ । मुनि श्री का उज्जैन में चातुर्मास सम्पन्न होने के पश्चात विहार करते हुवे आहु पार्श्वनाथ तीर्थ दर्शनार्थ पधारे। वहाँ से विहार करते हुए धार में शुभ आगमन हुआ। पूज्य मुनिश्री की आगवानी भव्य शोभायात्रा के साथ समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल मानतुंग गिरी तीर्थ प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष नरेश गंगवाल काग़दीपुरा तीर्थ के प्रमुख विनय छाबड़ा सहित अन्य समाजजनो द्वारा की गई। गुरुदेव के पाद प्रक्षालन अश्विन कासलीवाल उज्जैन और शास्त्र भेंट स्नेह लता विनायका उज्जैन द्वारा किया गया। श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति की अध्यक्ष संगीता सोगानी जी भी उपस्थित थी।

पूज्य मुनिश्री के सानिध्य में 15 दिसम्बर को आहुतीर्थ क्षेत्र पर भगवान पार्श्वनाथ जयन्ती महोत्सव के आमंत्रण पत्रिका का विमोचन भी किया गया । मुनिश्री ने अपनी देशना में बताया कि जैन धर्म में धारा नगरी का महत्व सिद्ध भूमि के बराबर है। यहाँ पर आचार्य मानतुंग स्वामी द्वारा रचित भक्तामर स्त्रोत की रचना हुई जो आज सम्पूर्ण जैन समाज में प्रतिदिन श्रद्धा के साथ स्तवन किया जाता है पूज्य मुनि श्री का 13 दिसम्बर तक धार में प्रवास सम्भावित है । जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने दी।

प्रेमचंदजी जैन का देवलोकगमन होने पर जैन परिवार द्वारा धार नगर का 24 वां नेत्रदान किया गया

धार। आनंदेश्वर मार्ग धार निवासी आशीष जैन के ससुरजी श्री प्रेमचंदजी जैन का 79 वर्ष की उम्र में बीमारी पश्चात शनिवार को प्रातः देवलोकगमन हो गया था। उनकी पुत्री प्रियंका जैन ने उनके नेत्रदान की इच्छा जताई। दिगंबर जैन समाज के वरिष्ठ वीरेंद्र जैन द्वारा धार मानव सेवा कल्याण समिति से संपर्क किया गया । समिति ने धार भोज हॉस्पिटल के नेत्र विभाग के डा. सौरभ बौरासी के माध्यम से नेत्रदान की प्रक्रिया पूर्ण की। नेत्रदान हेतु जैन परिवार का आभार व्यक्त किया। नेत्रदान अवसर पर समिति के मिलन पाल, प्रफुल्ल जैन, सोनू गायकवाड एवं मनोज जैन उपस्थित थे। समिति द्वारा धार नगर में किया गया 24 वां नेत्रदान है।

निर्वाचन कार्य में उत्कृष्ट सहयोग के लिए बी.एल.ओ. का सम्मान

धार। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार धार के त्रिमूर्ति नगर स्थित वॉर्ड क्रमांक 10 में विगत एक माह से चल रहे निर्वाचन नामावली के कार्य को जिन बूथ लेवल अधिकारियों (बी.एल.ओ.) और उनके सहयोगियों ने कर्तव्यनिष्ठा और आत्मीयता के साथ पूर्ण किया उनके उत्कृष्ट कार्य की सराहना की गई।

वॉर्ड क्रमांक 10 में बी.एल.ओ. धर्मेंद्र यादव , पंकज चौहान (सहायक- दीपक पिपलोदिया, ममता डामोर, गायत्री जोशी) (सहायक- प्रवीण दास बैरागी, संध्या जाधव, संगीता खाडलिक) ने घर-घर जाकर और त्रिमूर्ति नगर स्टेशन सांवरिया सेठ मंदिर पर पूरे दिन बैठकर मतदाताओं को फॉर्म भरने में सराहनीय सहयोग प्रदान किया। उनकी इस मेहनत के फलस्वरूप वॉर्ड के लगभग सभी मतदाताओं के फॉर्म सफलतापूर्वक ऑनलाइन दर्ज किए जा सके। इस कार्य में त्रिमूर्ति नगर निवासी एवं भाजपा महिला मोर्चा सेनापति मंडल उपाध्यक्ष मीना दुबे ने भी सहयोग दिया।

वॉर्ड क्रमांक 10 के युवा पार्षद अजीत जैन के मार्गदर्शन में त्रिमूर्ति नगर के रहवासी संघ प्रमुख जगदीश चंद्र जोशी, अशोक जैन, संतोष पांडे, रितेश अग्रवाल, अशोक मनोहर जोशी, रितेश शर्मा, राजू त्यागी,जसबीर भाटी सहित अन्य गणमान्य नागरिकों ने एक सम्मान समारोह आयोजित किया। सभी उपस्थित लोगों ने कर्मचारियों को दुपट्टे और मालाएँ पहनाकर उनका स्वागत किया और उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

कॉलोनी निवासियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए अनुरोध किया है कि इन समर्पित कर्मचारियों के नाम वरिष्ठ अधिकारियों को भेजे जाएं ताकि उन्हें उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उचित सम्मान मिल सके। यह जानकारी परशुराम कल्याण बोर्ड जिला प्रभारी अशोक मनोहर जोशी द्वारा दी गई।

धर्मेंद्र यानी मासूमियत का बादशाह

हिन्दी सिनेमा में दिलीप कुमार को ट्रेजिडी किंग कहा गया तो राज कपूर शोमैन थे। वहीं देव आनंद सदाबहार हीरो थे। लेकिन, धर्मेंद्र अपनी मासूमियत के लिए जाने जाते हैं। उन्हें मासूमियत का बादशाह कहना अतिशयोक्ति नहीं है। यह विरोधाभास भी है कि उन्हें 'ही-मैन' कहा गया। पर धर्मेंद्र जब किसी फिल्म के किरदार में हों या जब आप उनसे व्यक्तिगत रूप से मिले हों तो उनके अंदर का बच्चा हमेशा दिखता रहा है और उनके चेहरे पर मासूमियत झलकती रही। जब वे संवाद भी बोलते थे तो उनके बोलने के लहजे और उनके चेहरे के हाव भाव में भी मासूमियत दिखती थी। इसी खासियत की वजह से उनके व्यक्तित्व को अलग पहचान मिली। जिंदगी के आखिरी सफर में भी उनकी यह बादशाहत कायम रही है।

नवीन कुमार

धर्मेंद्र को मैंने बहुत नजदीक से देखा है, सुना है और पढ़ा भी है। मेरे व्यक्तिगत अनुभव में भी धर्मेंद्र एक मासूम बच्चे की तरह ही नजर आए। इसे कुदरत का करिश्मा कहें या उनके अंदर के बच्चे की मासूमियत जिसने उन्हें हर दिल अजीज बनाया। उनमें कोई बनावटीपन नहीं था। वह हर किसी से दिल खोलकर बात करते थे। उनमें कोई छल कपट नहीं थी। बातचीत के दौरान वह अपनी चौड़ी और मोटी हथेली का जिक्र करते थे जिसे वह अपने लिए भाग्यशाली मानते थे। वह एक जिंदादिल इंसान थे। जिंदगी का लुत्फ उठाना जानते थे। वह हमेशा सकारात्मक बातें करते थे। प्यार-मोहब्बत की बातें करते थे। शायद यही वजह है कि उन्हें शायरी से भी प्यार हो गया था। मीडिया के लोगों से भी जब वह बात करते थे तो अपनी लिखी हुई शायरी जरूर सुनाया करते थे। उन्हें शायरी से कब और कैसे प्यार हो गया इसका खुलासा उन्होंने नहीं किया। लेकिन, यह जरूर कहा कि शायरी उनकी जिंदगी का हिस्सा है। इस पल में वह अलग अंदाज में जीते हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि उनकी शायरी में उनकी जिंदगी का मर्म है। एक बार जब उनसे पूछा गया कि आप इतनी अच्छी शायरी करते हैं तो उसे किताब के रूप में क्यों नहीं लाते? इस पर उन्होंने बड़ी मासूमियत से कहा था कि यह तो मेरी जिंदगी है यह मेरी महबूबा है इसे किताबों में कैद करना नहीं चाहता। लेकिन धर्मेंद्र अपनी शायरी सोशल मीडिया पर भी पोस्ट किया करते थे। इंस्टाग्राम पर उन्होंने अपनी शायरी सुनाई, जो इस तरह है-सब कुछ पाकर भी हासिल-ए-जिंदगी कुछ भी नहीं, कमबख्त जान क्यों जाती है जाते हुए। पता नहीं कहां ले जाएंगे, कौन ले जाएगा, साथ ले जाएंगे। खैर, यह इंसानी फितरत है कि इकट्ठा करते रहो। अपना ख्याल रखो। लाइफ एंजॉय करो। आप सभी को प्यार।

अलग शख्सियत के होने के साथ-साथ धर्मेंद्र ने सिनेमा और परिवार के बीच का फासला हमेशा चौड़ा ही रखा। वह खुद भी फिल्मी पार्टियों में कम जाया करते थे। परिवार को इस चकाचौंध की दुनिया से अलग रखा करते थे। बेटे सनी देओल और बॉबी देओल के बाद पोते करण देओल और राजदीप देओल ने सिनेमा में कदम जरूर रखा। लेकिन, उन्होंने बेटियों अजीता और विजीता को इस दुनिया से दूर रखा। धर्मेंद्र की पहली पत्नी प्रकाश कौर को भी बहुत कम लोगों ने देखा। कोमल हृदय और मोहब्बत को गहराई से समझने वाले धर्मेंद्र ने ड्रीम गर्ल हेमा मालिनी के प्यार में भी कैद हुए। हिंदू परिवार में दो शादियां काफी संवेदनशील मामला होता है। धर्मेंद्र और उनका परिवार इस मामले में बातचीत नहीं करते। कई सालों बाद सनी और बॉबी को ईशा और अहाना के साथ देखा गया। लेकिन, हेमा मालिनी के साथ उनकी बेटियों को देओल परिवार का सदस्य के रूप में स्वीकार करने की बात उजागर नहीं हुई।

धर्मेंद्र जितने मासूम थे उतने ही ज्यादा वह संवेदनशील इंसान भी थे। कई ऐसे मौके आए हैं जब धर्मेंद्र ने बच्चों की तरह अपनी आंखों से आंसू बहाए हैं। ये खुशी के आंसू थे। एक मौका फिल्मफेयर

लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित होने का भी था। दिलीप कुमार से यह अवार्ड लेते हुए धर्मेंद्र भावुक हो गए थे। उनकी आंखें डबडबा गई थी। उसी मंच से उन्होंने कहा था कि इतनी सारी सफल फिल्मों और लगभग सौ लोकप्रिय फिल्मों में काम करने के बावजूद उन्होंने कभी भी सर्वश्रेष्ठ अभिनेता की श्रेणी में कोई फिल्मफेयर पुरस्कार नहीं जीता। उनकी भावनाओं का कद्र करते हुए तब दिलीप कुमार ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा था कि जब भी मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर से मिलूंगा, मैं उनके सामने अपनी एकमात्र शिकायत रखूंगा कि तुमने मुझे धर्मेंद्र की तरह सुंदर क्यों नहीं बनाया।

धर्मेंद्र की सुंदरता को लेकर दिलीप कुमार की टिप्पणी में काफी दम था। तभी तो हैंडसम धर्मेंद्र को सत्तर के दशक के मध्य में दुनिया के सबसे सुंदर पुरुषों में से एक चुना गया था। अब इसे संयोग ही कहा जाएगा कि जिस तरह से धर्मेंद्र सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार से वंचित रहे उसी तरह भाजपा के पूर्व सांसद और पद्म भूषण से सम्मानित होने के बावजूद वह राजकीय सम्मान के साथ विदा होने से भी वंचित रह गए। धर्मेंद्र ने अपने अभिनय से करोड़ों दिलों पर राज किया। उनके अभिनय में कोई बनावटीपन नहीं था। वह जीवंत अभिनय करते थे। उन्होंने तीन सौ से ज्यादा फिल्मों में काम किया था। शोले, सत्यकाम, चुपके चुपके, अनुपमा, जॉनी गद्दार, फूल और पत्थर, सीता और गीता, यादों की बारात, धरम वीर, लोफर जैसी फिल्मों में उनके अलग-अलग किरदार को समझा जा सकता है।

वह अपने सिनेमाई किरदार में जितने ईमानदार थे उतने ही अपने निजी जीवन में भी थे। यही वजह है कि वह राजनीति में सफल नहीं हो पाए। पंजाब के गांव से रिश्ता रखने वाले धर्मेंद्र किसानों के हक की भी बात करते थे। लेकिन वह विवादों से खुद को दूर रखते थे। इसलिए मुंबई में जिस तरह से अपना बंगलो बनाया है उसमें उनका पूरा परिवार रहता है और उसमें सारी सुविधाएं हैं। यहां तक कि खेल का मैदान भी है जहां हर तरह के खेल खेलने की सुविधा है। जिम भी आधुनिक है। धर्मेंद्र को जब गांव की जिंदगी जीने की इच्छा होती थी तो वह फार्म हाउस चले जाते थे और ऑर्गेनिक खेती भी कर लेते थे।

(लेखक मुंबई के वरिष्ठ पत्रकार हैं)

सलमान का जबरदस्त लुक सामने आया

सलमान ने अपने चाहने वालों को एक खास फोटो का तोहफा दिया, जिसमें वे बालकनी की दीवार के सहारे खड़े दिख रहे हैं। फोटो में उनका आधा चेहरा दिख रहा है, जबकि बाकी आधा उनके मजबूत हाथों से ढंका हुआ है। उनकी जबरदस्त फिटनेस, मसल्स, शानदार शरीर और स्टाइलिश लुक ने फैंस को इस तस्वीर पर दीवाना बना दिया। उन्होंने अपनी खुद की कपड़ों की लाइन बीइंग ह्यूमन की टी-शर्ट पहनी है और कैप्शन में ब्रांड को टैग भी किया, जिससे चर्चा और बढ़ गई। दिसंबर सिर्फ सलमान के लिए ही खास नहीं है, बल्कि उनके फैंस के लिए भी खास है। क्योंकि, इस महीने 27 दिसंबर को भाईजान अपना जन्मदिन मनाते हैं। फैंस बेसब्री से उनके खास दिन का इंतजार कर रहे हैं और इसे बड़े उत्साह के साथ मनाने के लिए तैयार हैं।

ऐसे में अगर इस महीने उनकी कपड़ों की लाइन बीइंग ह्यूमन कोई खास डिस्काउंट देती है, तो हैरान होने की जरूरत नहीं। इसके अलावा, सलमान खान की फिल्मों की लाइनअप भी जबरदस्त है, जिसमें उनकी आने वाली और काफी चर्चित वॉर ड्रामा फिल्म, बैटल ऑफ़ गालवान शामिल है, जिसने पहले लुक के सामने आने के बाद से ही इंटरनेट पर खूब चर्चा और दर्शकों में उत्सुकता पैदा कर दी है। दूसरी तरफ कबीर खान के साथ उनकी मुलाकात, खासकर बजरंगी भाईजान 2 के जरिए, उनके पहले के काम की तरह इमोशनल और असरदार कहानी कहने की राह में एक नया मोड़ साबित हो सकती है।

रियल बॉक्स

आदर्शवाद से यथार्थ तक नायक का बदला चरित्र

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

पुसिनेमा का इतिहास केवल मनोरंजन की कहानी तक नहीं, बल्कि भारतीय समाज के बदलते मनोविज्ञान की जीवंत झांकी भी है। समाज जैसा सोचता और जीता है, वही परदे पर प्रतिबिंबित होता है। यही वजह है कि हिंदी फिल्मों के शुरूआती काल युग से आज तक 'नायक' का चरित्र समाज की नब्ज़ पर सीधे दस्तक देता आया है। नायक की आदर्शवादी, विद्रोही या यथार्थवादी छवि उस दौर की सामाजिक आकांक्षाओं और विचलनों को दर्शाती है। फिल्मों के शुरुआती दौर (1920 और 1930) के दशक में सिनेमा आज की तरह समाज के नैतिक मूल्य तय नहीं करता था। बल्कि, उन्हीं का विस्तार भी कर रहा था। ऐतिहासिक और मिथकीय पात्र श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान शंकर और हरिश्चंद्र जैसे पात्र फिल्मों में बार-बार दिखाई देते रहे। तब दादा साहेब फाल्के की 'राजा हरिश्चंद्र' (1913) से ही नायक सत्य, त्याग और धर्म का प्रतीक बन गया था। इन कथानकों में नायक कोई सामान्य मनुष्य नहीं, बल्कि आदर्श पुरुष माना जाता था, जो हर हालात में धर्म और सच के रास्ते पर चलता था। दरअसल, उसका यह आदर्शवाद औपनिवेशिक देश की सामाजिक मानसिकता से जुड़ा था। अंग्रेजों के शासन में जनता के पास सामाजिक या राजनीतिक प्रतिरोध का कोई मंच नहीं था, इसलिए सिनेमा ने नैतिकता और धर्म के प्रतीकों के माध्यम से एक मानसिक सांत्वना का काम किया और दर्शकों में नवचेतना जगाई।

बंगाल में सत्यजित राय ने अपनी सजग चेतना से भारतीय चिंतन को प्रभावित किया। आवारा, मदर इंडिया और 'जागते रहो' जैसी फ़िल्में भी इसी दौर में बनी। 1955 में राज कपूर की 'श्री 420' आई, जिसमें नायक अमीर होने के लिए गलत रास्ते पर चल पड़ता है! लेकिन, नायिका आदर्शवाद पर अड़ी रहती है और क्लाइमेक्स तक आते नायक को भी सही रास्ते पर ले आती है। आदर्श की जीत इस दौर में आम बात थी। इस दौर में फिल्मकार का पूरा चिंतन समाज के प्रति सरोकार उसके नायक में झलकता था! कई बार तो खलनायक भी नायक के आदर्शवाद से प्रभावित होता था। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता, तो अंत में उसके लिए पुलिस आ जाती थी! शंभु मित्रा की फिल्म 'जागते रहो' भी इसी आदर्शवादी समय काल का निर्माण था! फिल्म में दिखाया गया था कि अमीर होने के लिए नायक सब कुछ करता हैं! जबकि, ईमानदार गरीब आदमी पानी तक के लिए भी तरसता है। पानी भी पीता है, तो उसे चोर करार दिया जाता है। शम्भू मित्रा के इस गरीब नायक ने पूरे समाज को आईना दिखाया था!

समय के साथ हिंदी फिल्मों में नायकत्व भी सशक्त हुआ! इसलिए कि हमारा समाज हमेशा ही ऐसे नायक की तलाश में रहा है, जो खुद की नहीं, सबकी बात करे! समाज के लिए खड़ा हो! जिसमे सभी का नेतृत्व करने की क्षमता हो! इसके पीछे सबसे बड़ा कारण ये था कि इस दशक में देश की नई सरकार में ही कई नायक थे, जो आजादी की जंग से उभरे थे। महात्मा गांधी वाला युग बीत चुका था, नेहरू का दौर समाज पर हावी था। पं नेहरू की अपनी अलग आइडियोलॉजी थी! वे प्रैक्टिकल लाइफ को समझते थे! फिल्म प्रेमी भी थे और फिल्मकारों की लोकप्रियता से प्रभावित रहते थे। इस दौर में उन्होंने फिल्मों के विकास के लिए कुछ कदम भी उठाए गए! इससे भी फिल्मों में नायकत्व को आधार मिला! पिछले दशकों के मुकाबले आजादी के बाद के इस दशक में फिल्में ज्यादा बेहतर ढंग से अपनी बात कहने लगी! फिल्मों में भाषणबाजी से हटकर मनोरंजन का मसाला दिखाई देने लगा! अभाव, भेदभाव, जातिवाद, गरीबी, सांप्रदायिकता, हिंसा और महिलाओं पर जुल्म जैसी समस्याओं के बीच कहीं न कहीं मसाला और रोमांस नजर आने लगा!

सन 1947 के बाद आजाद भारत ने नए सामाजिक आदर्श गढ़ना शुरू किए। नेहरूवादी समाजवाद, सामूहिक विकास और समानता की विचारधारा का असर सिनेमा पर भी गहराई से पड़ा। इसी समय काल में हिंदी फिल्मों में 'आदर्शवादी नायक' की पहचान स्थाई बनी। देव आनंद, राज कपूर और दिलीप कुमार इस युग के तीन सांस्कृतिक नायकत्व के प्रतीक बने। देव आनंद ने आधुनिक भारत के आत्मविश्वासी, प्रगतिशील नौजवान की नई छवि को गढ़ा। उन्होंने दर्शाया कि विचार भले ही आधुनिक हों, पर जड़ें जमीन के अंदर होना चाहिए। राज कपूर की

फिल्म आवारा (1951) और श्री 420 (1955) का नायक गरीब तो था, पर ईमानदार भी था, जो भ्रष्टता के बीच अपने ईमान को बचाकर रखने की कोशिश करता रहता है। इसके बाद दिलीप कुमार की नया दौर (1957) या देवदास (1955) का पात्र भावनाओं, समाज और नैतिक द्वंद्वों का प्रतिनिधि की तरह उभरकर सामने आया। इसी दौर में नायिका का चरित्र भी नायक के आदर्शवाद के आसपास घूमता रहा। नायक की ईमानदारी, संघर्षशीलता और आदर्श प्रेम पर वह मोहित होती थी। नैतिकता और प्रेम फिल्मों के मुख्य मूल्य थे। 1960 के दशक तक यह परंपरा जारी रही, जब गाइड (1965) और तीसरी कसम (1966) जैसे फिल्मों ने नायक के आदर्शवाद को दार्शनिक और भावनात्मक गहराई भी दी।

इस दौर (1970) के दशक में सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता, बेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार बढ़ने लगी थी। इस दौर में रोमांटिक और सामाजिक आदर्श वाले नायक का पतन हुआ और परदे पर 'एंग्री यंग मैन' ने जन्म लिया। जनआक्रोश के प्रतीक के रूप में अमिताभ बच्चन की जंजीर (1973), दीवार (1975) और शोले (1975) आई जिसमें नायक सभ्य समाज का हिस्सा नहीं, बल्कि उसके खिलाफ खड़ा एक बगावती था। वास्तव में तो परदे पर यह बदलाव प्रतीकात्मक था। दर्शक नायक में वह आदर्श रूप देखना नहीं चाहता था, जो समस्याओं को देखकर मुंह मोड़ ले, बल्कि उसे ऐसा नायक देखना था, जो व्यवस्था के खिलाफ खड़ा होकर विद्रोह करे। यह विद्रोही नायक कानून की सीमाओं को तोड़ता है, हिंसा को मानता और नैतिकता की अपनी नई परिभाषा गढ़ता था। उसका आदर्शवाद तिरोहित होकर व्यावहारिक यथार्थ में तब्दील होने लगा था। यह व्यवस्था विरोधी नायक अपराधी नहीं था, बल्कि उसे भ्रष्ट खलनायक उसकी आंखों में चुभता था। खलनायक को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया गया था कि वो पूरी व्यवस्था का प्रतीक था, जिसे क्लाइमैक्स में नायक ध्वस्त करता है।

आर्थिक उदारीकरण के साथ 1990 के दशक में भारतीय समाज के मूल्य फिर बदलते गए। 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' (1995) ने ऐसे नायक को पेश किया, जो पारिवारिक परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाता है। शाहरुख खान का रोमांटिक नायक अब भावनाओं में आधुनिक, लेकिन जड़ों में भारतीय था। इस दौर में नायक का संघर्ष बाहरी नहीं, बल्कि भीतरी हो गया। प्रेम, पारिवारिक अपेक्षाएं और व्यक्तिवाद के बीच संतुलन बनाना उसकी चुनौती थी। सिनेमा अब ग्लोबल भारतीय का प्रतिबिंब बन रहा था, जहां आदर्शवाद का अर्थ बदलकर 'संवेदना और सहअस्तित्व' बन गया। इसके बाद 21वीं सदी में सिनेमा ने आदर्श नायक की परिभाषा को ध्वस्त कर दिया। अब नायक अनिवार्य रूप से सदाचारी नहीं रहा। रंग दे बसंती (2006) में युवा नायक व्यवस्था से असहमति जताने के लिए हिंसक रास्ता चुनता है। जबकि, ओमकारा (2006), गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012) या अंधाधुन (2018) जैसी फिल्मों में नायक का चरित्र 'ग्रे' (धूसर) क्षेत्र में काम करता है। आज का दर्शक नायक से आदर्श नहीं, प्रामाणिकता चाहता है। उसे यह स्वीकार है कि मनुष्य विरोधाभासी होता है। उसमें अच्छाई और बुराई दोनों का मिश्रण है। यही कारण है कि आयुष्मान खुराना, राजकुमार राव या नवाजुद्दीन सिद्दीकी जैसे कलाकार आम आदमी के भीतर के नायक को सामने लाते हैं, जो विवश है, लेकिन कोशिश करता है; जो धोखा खाता है, मगर उम्मीद नहीं छोड़ता।

यह भी सच है कि समकालीन सिनेमा में कहानी का केंद्र अब 'नायक' नहीं, बल्कि हालात बन गए। आर्टिकल 15, सरदार उधमसिंह, 12वीं फेल या 'मसान' जैसी बदले ज़माने की फिल्मों में नायक नैतिकता या मुक्ति का प्रतीक नहीं, बल्कि समाज की विसंगतियों का विश्लेषक बनकर सामने आता है। यह उसका संघर्ष निजी नहीं, बल्कि व्यापक है। यह नई प्रवृत्ति दर्शाती है, कि हिंदी सिनेमा अब उस युग में है जहां दर्शक और कहानीकार दोनों ही आदर्शवाद की जगह यथार्थवाद को ज्यादा महत्व दे रहे हैं। समाज बदल चुका है। अब 'नायक' केवल आदर्श नहीं, बल्कि सवाल पूछने वाला मानव है। हिंदी फिल्मों में नायक का सफर एक दर्पण की तरह है, जिसमें समाज की सोच, मूल्य और आकांक्षाएं झलकती हैं। मूक युग के धार्मिक सत्य से लेकर आज के नैतिक जटिलताओं वाले पात्र तक, यह विकास केवल सिनेमा का नहीं बल्कि भारतीय मानस का भी है। यदि आज कहीं आदर्श नायक दिखाई देता है, तो वह अब सभ्यता की पूर्ण छवि नहीं, बल्कि व्यक्तिगत विवेक का प्रतीक है। नायक अब न तो निष्पाप है, न सर्वज्ञानी वह बस एक इंसान है, जो समय के साथ अपनी पहचान खोजना हुआ आगे बढ़ रहा है। यही उसकी सबसे प्रामाणिक और सशक्त छवि है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

भारत और रूस की मैत्री का सेतु है हिंदी फिल्में

अशोक जोशी

भारतीय सिनेमा की पूरी दुनिया दीवानी है। हिंदी फिल्मों की कहानियों के अलावा इसके गीत और संगीत के साथ भावनात्मक संबंधों, संस्कृतियों तथा परम्पराओं और तीज-त्यौहारों के अलावा रीति रिवाज और मूल्यों के नाटकीय फिल्मांकन

के कारण भारतीय फिल्में दुनियाभर में लोकप्रिय हैं। रूस भी इसी दुनिया का वह हिस्सा है, जहां भारतीय फिल्मों को पचास के दशक से लेकर आज के समय में भी खूब पसंद किया और देखा जाता है। वैश्विक परिदृश्य में भारत और रूस के मैत्री संबंध का यह अहम कदम है। इतना ही अहम है भारत और रूस के बीच फिल्मों से जुड़ा संबंध जो पचास के दशक से लेकर आज तक यह बरकरार है। दोनों देशों में सरकारें बदलती रही, लेकिन फिल्मों का प्रभाव कभी नहीं बदला।

सिनेमा के क्षेत्र में भारत और रूस के संबंध दशकों पुराने, गहरे और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हैं। जहां भारतीय फिल्में, खासकर राज कपूर की 'आवारा' और मिथुन चक्रवर्ती की 'डिस्को डांसर' रूस में बेहद लोकप्रिय रही। इससे दोनों देशों के बीच मजबूत सॉफ्ट पावर और लोगों से जुड़ाव बना और हाल ही में राष्ट्रपति पुतिन ने इस संबंध को और मजबूत करने पर जोर दिया। जिसमें रूसी टीवी पर भारतीय फिल्मों के लिए अलग चैनल और भविष्य में संयुक्त फिल्म निर्माण की संभावनाएँ शामिल हैं। 1950 के दशक में सोवियत संघ के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के रूप में भारतीय फिल्मों का प्रवेश हुआ, जो साम्यवादी विचारधारा और सामाजिक मुद्दों से मेल खाता था। राज कपूर की 'आवारा' और मिथुन चक्रवर्ती की 'डिस्को डांसर' ने रूस में जबरदस्त सफलता हासिल की और लाखों संख्या में टिकट बिके। इससे भारतीय सिनेमा की एक मजबूत पहचान बनी। भारतीय फिल्मों का क्रेज समूचे एशियाई और यूरोपीय देशों से लेकर अमेरिका तक है। यही वजह है कि आज की तारीख में भी अमिताभ बच्चन, रजनीकांत, शाहरुख खान या अल्लू अर्जुन को लेकर दीवानगी देखी जाती है।

गुजरे जमाने में राज कपूर, देव आनंद, दिलीप कुमार जैसे दिग्गज कलाकारों ने सांस्कृतिक परम्परा को आगे बढाने का काम किया। साठ के दशक में भारतीय फिल्मी सितारों को एक प्रतिनिधि मंडल रूस गया था। इसमें राज कपूर, नर्गिस, देव आनंद, बलराज साहनी, निरूपा राय ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। रूस में वह जहां-जहां ये लोग पहुंचे, रूसी जनता ने पलक पांवडे बिछाकर

उनका स्वागत किया था। आज इस परम्परा को आज के कलाकार आगे बढ़ा रहे हैं। भारतीय फिल्मों ने रूसी दर्शकों को भारत की संस्कृति, संगीत और भावनाओं से जोड़ा और यह संबंध आज भी कायम है। इस समय तो रूस भारतीय फिल्मों के लिए एक आकर्षक शूटिंग लोकेशन बन गया है। 'पठान' और 'टाइगर-3' जैसी कई फिल्मों की शूटिंग इसका ताजा उदाहरण है। रूस में सरकार स्टूडियो और फिल्म निर्माण में छूट भी दे रही है।

रूस की फिल्मों का मिजाज कुछ अलग ही होता है। रूसी सिनेमा कर्मर्शियल रूप से भले ही ज्यादा सफल न हो, लेकिन वहां बनने वाली ज्यादातर फिल्में राष्ट्रवाद पर आधारित होती है। ऐसे में यह जानना दिलचस्प है, कि इस साल प्रदर्शित फिल्म 'पुतिन' रूसी राष्ट्रपति के राजनीतिक जीवन पर आधारित है। लेकिन, यह फिल्म रूस मे नहीं, बल्कि हॉलीवुड में बनी थी। जहां तक पुतिन का सवाल है उन्हें खुद भी सिनेमा से गहरा लगाव रहा है।

उन्हें भारतीय फिल्में ज्यादा पसंद है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि पिछले साल 'मास्को फिल्म समारोह' के दौरान पुतिन ने बताया कि रूस में भारतीय फिल्मों के लिए एक समर्पित टीवी चैनल है। उन्होंने भारत के साथ मिलकर रूस में भारतीय फिल्मों के वितरण और प्रचार को और बढ़ावा देने की इच्छा भी व्यक्त की थी।

भारतीय और रूसी फिल्म निर्माता पहले से संयुक्त फ़िल्में बनाते आ रहे है। उमेश मेहरा की 'अलीबाबा चालीस चोर' और शशि कपूर की फिल्म 'अजूबा' भी रूस के सहयोग से बन चुकी है। इसमें कुछ रूसी कलाकारों ने भी काम किया था। राज कपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में भी रूसी सर्कस के साथ रूसी अभिनेत्री क्षण राबिनकिन्ना को राज कपूर से प्रेम करते दिखाया था। रूस निर्माताओं ने आगे भी संयुक्त फिल्में बनाने में दिलचस्पी दिखाई। न केवल पुतिन बल्कि हमारे प्रधानमंत्री भी भारत और रूस के फिल्मी सबंधों पर अपनी राय रख चुके हैं। पिछले साल जब नरेंद्र मोदी मॉस्को गए थे, तब उन्होंने भी राज कपूर की रूस में लोकप्रियता की चर्चा करते हुए कहा था कि 'आवारा हूं' के साथ 'सर पे लाल टोपी रूसी फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' भारत और रूस की सांस्कृतिक मैत्री का परिचायक है। उन्होंने यह भी कहा था कि राज कपूर और मिथुन दा जैसे कलाकारों ने भारत और रूस की दोस्ती को मज़बूत बनाया और आगे भी यह सिलसिला जारी रहेगा।

रूस-यूक्रेन युद्ध बाद फिल्मों के विषय बदल गए और फिल्मो के कथानक में भी बदलाव आया। आजकल युद्ध और राष्ट्रवाद के विषय फिल्मों में छाए हुए है। रूस भी इससे अछूता नहीं। रूस ने इस साल 'अगस्त' और 'पुतिन' नाम फिल्मों के जरिए इसे बड़े परदे पर पेश किया है। वहां इस समय ऐसी फिल्में भी बन रही हैं, जिनमें यूक्रेन को एक खलनायक के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है। रूस फिल्म को माध्यम बनाकर यह साबित करने का प्रयास कर रहा है, कि यूक्रेन दुनिया का सबसे खतरनाक देश है। लेकिन, भारत ने इस विषय से परहेज ही दिखाया।

वहां से छात्रों और नागरिकों को लाने का मामला एक थ्रिलर फिल्म का विषय बन सकता था। लेकिन, भारत की विदेशी नीति इसकी इजाजत नहीं देती। क्योंकि कूटनीतिक तौर पर भारत रूस के साथ यूक्रेन के साथ भी फूंक फूंककर कदम रख रहा है। मजे की बात तो यह है कि भारतीय फिल्में जितनी ज्यादा रूस में लोकप्रिय है, यूक्रेन में भी उन्हें उतने ही चाव से देखा जाता है। इन तमाम विवसंगतियों के चलते जिस तरह भारत और रूस की मैत्री और सांस्कृतिक संबधों में मजबूती आ रही है। उसे देखते हुए यह आशा की जा सकती है कि फिल्म निर्माण में भी यह एक मजबूत रिश्ता स्थापित करेगा।

मान सके तो मान... ये नहीं सम्मान !

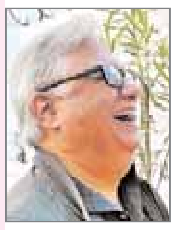

प्रकाश पुरोहित

पिछले हफ्ते ही उस युवा गायक को जबर्दस्ती सम्मान मिला था। उसे एक-दो रोज तो सम्मानित करने वाले चीफ गेस्ट का नाम याद रहा, फिर शेखर, शरद, सुभाष, शंकर और ना जाने कौन से नाम याद आने लगे, मगर असली नाम भूल गया, क्योंकि जिसने दिया था, सरकारी दल का सांसद था। अब युवा रहने वाला महाराष्ट्र का और सम्मान देने वाला मालव प्रदेश का! वैसे सांसद भी कहां जानता था उस युवा को या उसकी कला के बारे में! आयोजकों ने मतलब साधने के लिए सांसद को मौका दे दिया था कि इस बहाने नजदीकी हो जाएगी तो धंधे में काम आएगी। युवा को भी तब किसी को बताते हुए गर्व भी होता कि किसके हाथों मिला है। यहां तो नाम ही ढंग से पता नहीं... और याद कर भी लें... और सामने वाला पूछ ले कि ये कौन है तो बताने में भी गर्दन और नजरें नीची करनी पड़ें। विडंबना है कि सम्मान लेकर भी कोई इस कदर परेशान हो सकता है। देने वाले का तो कुछ नहीं गया और लेने वाला बोझ की तरह ढो रहा है। यहीं समझ में आता है कि कुछ लोग पद्म-पुरस्कार भी लेने से इनकार क्यों कर देते हैं। जानते हैं, यहां लेने वाला नहीं, देने वाला सम्मानित हो रहा है। इस तरह हम देखते हैं कि सम्मान के भी दो नहीं, कई पहलू हो सकते हैं, सिवाय किसी एक को सम्मानित करने के।

इसलिए कलाकार को भी कुछ नियम बना लेने चाहिए। जैसे, गाने या बजाने आ रहा हूं तो कहीं सम्मान तो नहीं कर देंगे...? जिसके हाथों सम्मान दिया जा रहा है, उसके बारे में कम से कम एक माह पहले पूरी जानकारी दें..., जो सम्मान देने आ रहे हैं, उन्हें कलाकार या कला के

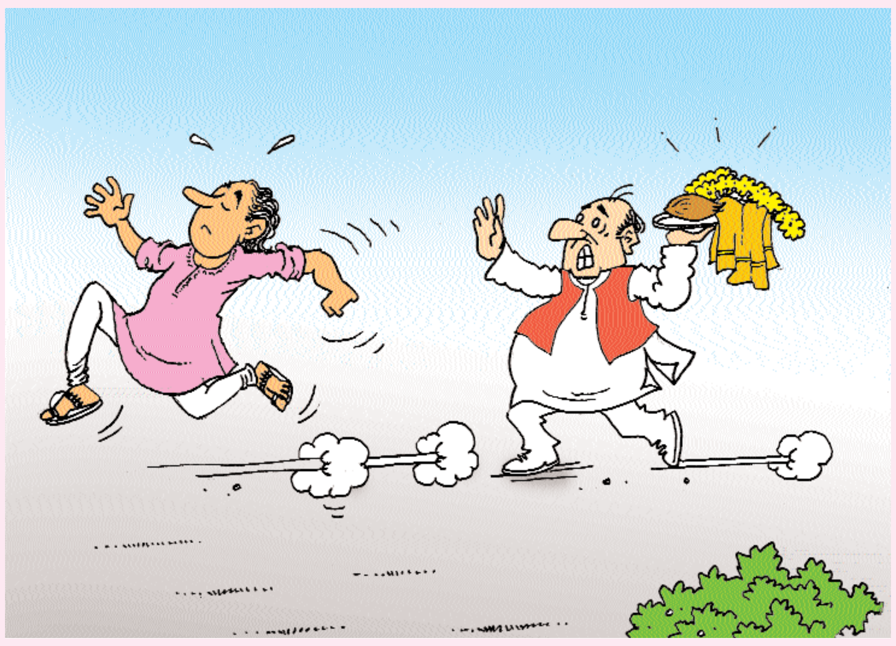

पुरस्कार से मतलब था कि देने वाला श्री भगवान!

दाद तो पुरस्कार देने वाले को दी जानी चाहिए कि जिसे संगीत का 'स' भी नहीं पता, बंदा तैयार हो गया! खैर, राजनीति में इतनी शर्म-हया और समझदारी बरतने लगा तो कर ली राजनीति! जब सामने वाले को ही अपने पुरस्कार का सम्मान नहीं है तो फिर नेता से ऐसी नपुंसक उम्मीद ही बेकार है। किस्सा है, किसी नेता से कुछ लोग ऑटोग्राफ ले रहे थे, पास खड़े व्यक्ति को भी नेताजी ने दस्तखत दे दिए। उस व्यक्ति ने दस्तखत देखे और कुछ समझ नहीं आया तो पूछ लिया- 'सर, आपका नाम क्या है।' कोई सोच-समझ वाला होता तो शायद बोलती बंद हो जाती, लेकिन नेताजी ने जोर का ठहाका लगाया और बाकी लोग भी हंसने लगे कि अच्छा मजाक कर लेते हो!

सच बात तो यह है कि किसी कलाकार के सम्मान की वजह कला नहीं, बल्कि आयोजकों की कलाकारी होती है। कहीं पे निगाहें, कहीं पे निशाना का यह बढ़िया नमूना है। युवा गायक आया तो गाने के लिए था, लेकिन उसे जरा भी इलहाम नहीं था कि यूं किसी अनजान के हाथों सम्मानित कर दिया जाएगा।

असल में तो बेचारा हकबका गया था। सम्मान तो ठीक है, लेकिन किसके हाथ, यह उसके लिए चिंता का विषय था। किसी ने ढंग से बताया ही नहीं। कोई नामचीन संगीतकार, लेखक या चित्रकार होता तो वह धन्य हो जाता। बारे में कुछ अता-पता भी है या नहीं? अगर कला के मामले में जीरो बटे सन्नाटा है तो उनसे दो शब्द बोलने के लिए कतई नहीं कहा जाएगा। वैसे यह मुश्किल है कि नेता हो और बगैर बोले मंच से उतर जाए।

किस्सा है कि जब साहित्यकार को सत्ता दल के भ्रष्ट नेता के हाथों, बगैर पूर्व सूचना के सम्मानित कर दिया तो... बाद में पता चला कि सम्मान-पत्र तो नगर के सार्वजनिक टायलेट में मिला... कि साहित्यकार अपने घर और शहर में मुंह दिखाने काबिल रहना चाहते थे! इस नजरिए से यह भी समझ आता है कि कलाकार को इनकार भी करना चाहिए, वरना करने वाले के बाप का क्या जा रहा है! अपनी इज्जत तो अपने हाथ है... जैसी चाहे उपयोग में लाएं!

याद आता है उस्ताद बिस्मिल्लाह खां का संसद में शहनाई वादन! समाप्ति पर खुद सांसद उनसे जाकर मिल रहे थे। वहीं पंडित जसराज के ये हाल थे कि हर सांसद के पास जाकर हाथ मिला रहे थे। जब कलाकार ही ऐसे हैं तो सम्मान देने वाले का क्या दोष!

आजकल सिर्फ राजनीति से गुजारा नहीं है, इसलिए नेतागीरी में कलावाद तेजी से फैलाया जा रहा है। अब यह कलाकारों पर है कि कितना अपने आप को और अपनी कला को बचाते हैं, वरना तो चुनाव का फार्म भरते हुए भी कलाकार को साथ रखने का फैशन चल पड़ा है। ठीक है, बाद में पद्म पुरस्कार दे कर उन्हें नवाज दिया जाता है!

होम बाउंड-आसमां छूने की तमन्ना रोटी में दफना दी

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

अद्भुत, उत्कृष्ट हर लिहाज़ से, ऐसा इसलिए जब आप किसी फिल्म के पात्रों में स्वयं को जीने लग जाते हैं, उनके दुःख से दुखी, उनके सुख में खुश होने लगते हैं तो समझ लीजिए फिल्म वास्तविकता का धरातल छू रही है। धर्मा प्रोडक्शन के तले बनी इस फिल्म के कलाकार हैं ईशान खट्टर, विशाल जेठवा, जाह्नवी कपूर। पहले हम 'होम बाउंड' का अर्थ समझ लें। इसमें जीवन-स्थान घर तक सीमित जाता है। इसे नीरज घेवान ने निर्देशित किया है। इस फिल्म को 'ऑस्कर 2026' के लिए सर्वश्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय फीचर श्रेणी के लिए भारत की आधिकारिक प्रस्तुति के रूप में चुना गया है। टीआईएफएफ ने होम बाउंड को द्वितीय उपविजेता के लिए चुना है और इंटरनेशनल पीपल्स चॉइस अवार्ड जीता है।

कुथानक उत्तर भारत के एक छोटे से गांव के बचपन के दो दोस्तों के इर्दगिर्द घूमता है। दोनों पुलिस कांस्टेबल की सरकारी नौकरी पाने के लिए बेताब हैं। चंदन कुमार वास्तव में अनुसूचित जाति से है। उसके मां-बाप मजदूरी करते हैं। बहन स्कूल में बच्चों की गंदगी साफ करती है। चंदन को लड़का होने के नाते पढ़ाई व पुलिस की नौकरी की तैयारी का मौका मिलता है। उसकी बहन भी पढ़ना चाहती है मगर के हालात में में वो कुछ नहीं कर पाती है। चंदन स्वाभिमानी है। वह सरकारी नौकरी के लिए जनरल कोटे में आवेदन करता है। इधर, स्टेशन पर उसे सुधा भारती नाम की लड़की मिलती है। वो भी अनुसूचित जाति से है। दोनों एक दूसरे को पसंद करते हैं। सुधा उसे कॉलेज में पढ़ने को प्रोत्साहित करती है। चंदन सरकारी दफ्तर में नौकरी की पूछताछ करने जाता है तो पता चलता है कि लिस्ट निकलने पर स्थगन लग गया है। अधिकारी को चंदन बताता है कि वो कायस्थ है पर अधिकारी समझ जाता है। वह कहता है, तुम अपनी सही जाति लिखते तो तुम्हारा कोटे में सिलेक्शन हो जाता। इस पर चंदन कहता है कि हमें पुलिस की नौकरी में भी वो लोग बाथरूम नाली साफ करवाते।

चंदन की नौकरी की खबर पाकर शोएब अवसाद में चला जाता है। उसे अपनी जाति के कारण समाज में छोटे से गाँव में बहुत भेदभाव झेलना पड़ता है। दोनों की दोस्ती में दरार आ जाती है। पुलिस की नौकरी के लिए चयन न होने पर शोएब निराश होकर प्यूरीफायन की कंपनी में चपरासी हो जाता है। उसके पिता के पैर का ऑपरेशन होना है। वह पैसे जमा करने कोशिश करता है। उसकी सेल्समैनशिप स्किल इतनी अच्छी होती है कि उसे सेल्समैन की नौकरी ऑफर हो जाती है पर मुस्लिम होने के कारण उससे पुलिस वेरीफिकेशन और माता-पिता के कागज मंगवाए जाते हैं और उसे एक पार्टी में बुलाकर बेइज्जत किया जाता है। शोएब नौकरी छोड़ देता है। इधर, चंदन को पता चलता है कि उसे नौकरी नहीं मिली तो वो अपने पिता ही जगह सूरत में कपड़ों की फैक्ट्री में काम करने चला जाता है। सुधा निराश हो कर उससे लड़ाई कर लेती है। वो कहता है उसे पैसो की ज़्यादा जरुरत है। उसकी मां के पैर काम कर-कर के फट जाते हैं। इधर, मां को जाति के कारण स्कूल में खाना बनाने के काम से हटा दिया जाता है। चंदन मेहनत करके घर पैसा भेजने लगता है। गाँव में उसका घर भी बनने लगता है। शोएब के पास कमाई का कोई जरिया नहीं

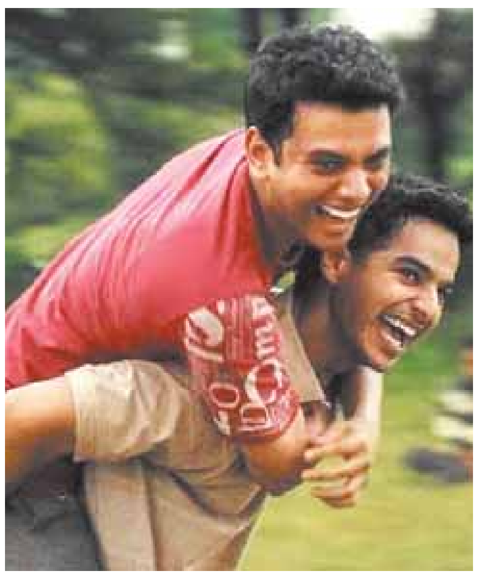

रह जाता है और वो सीधे चंदन के पास पहुँच जाता है। दोनों दोस्त खुशी-खुशी फैक्ट्री में नौकरी करते हैं और बेहद संघर्ष के बाद भी घर पैसे मे गर्व महसूस करते हैं। खुद रूखी सूखी खाते हैं। इसी बीच शोएब कर्ज लेकर पिता का ऑपरेशन करवाता है। चंदन के जन्मदिन पर शोएब चुपचाप सुधा को बुलाता है। वो कहती है कि मैं तुम्हारी बात अब समझ पाई। मैंने सोचा था कि हम दलित होकर भी पढ़-लिख कर बहुत बड़े सरकारी अफसर बनेंगे। दुनिया-समाज में जनरल कोटे के साथ बैठेंगे क्योंकि मेरे पिता ने दलित होने पर बहुत बेइज्जती झेली है।

अब दोनों तकलीफों का अंत नहीं। अब कोविड आ जाता है। किसी तरह दोनों जान बचा एक ट्रक में बैठ कर आते हैं। चंदन को कोविड हो जाता है। उन्हें गांव से 400 किलो मीटर पहले छोड़ दिया जाता है। अब आगे की कथा मैं नहीं बताऊंगी।

सबसे पहले तो मैं तीनों मुख्य कलाकारों के साथ उनके फैमिली मेंबर्स बने कलाकारों को साधुवाद कहूँगी। उन्हें देख कर ऐसा लगता है मानो असली चरित्र हैं। फिल्म देखते-देखते कई बार आंखें भीग जाती हैं। जाह्नवी कपूर पहली बार नॉन ग्लैमरस रोल में बेहतरीन लगी है। पृष्ठभूमि, गांव, फैक्ट्री, वेशभूषा आपको वास्तवकता की तरफ ले जाती है। दोनों परिवारों का संघर्ष, छोटे शहरो में फैलस जातिवाद का जहर जिसे जिसे हम शहर में रहकर महसूस नहीं कर पाते। शुरुआत में एक छोटी सी नौकरी पाने की चाह में स्टेशन पर हजारों की संख्या में भागते बच्चे दर्शकों को सोचने पर मजबूर करते हैं। जो बच्चे ऐशो आराम के में रहकर बड़ी नौकरी पाने की चाह के चलते अवसाद में आ रहे हैं उन्हें चंदन, शोएब का संघर्ष देखना ही चाहिए। कोविड का दृश्य इतना मार्मिक है कि मुझे कोविड के दिनों की लिखी एक नज्म याद आ गई। इस फिल्म के बाद वो नज्म सामयिक हो उठी है। तब तक के लिये अपने बासपास के चंदनों और शौहेब से पूछते रहिए मुस्कुरा के और क्या कह रही है जिंदगी-

ये केवल रोटी की भूख थी
जो मुझे शहर ले आई
ये बात दीगर है कि रोज़
सोते समय माई-बापू की याद आई
लोकल ट्रेन देखता, भीड़ देख उमगता
वड़ा पाव खाता, रोज़ उन्हें ख़त लिखता
आखिर ये सिलसिला कब तक चलता
थकन से अब कलम नहीं चलती
बंबई की रातें उतनी हसीन नहीं लगती
फिर ख़्वाबों को नींद की गोली खिला दी
आसमां छूने की तमन्ना रोटी में दफना दी
मां-बाप को लगता बेटा शहर में
बड़ा काम कर रहा है
उन्हें क्या पता पेट अभी भी
भूख से लड़ रहा है
खांसी के चलते
मालिक ने होशियार किया
पर डॉक्टर की जगह
हकीम से काम चला लिया
पत्नी लिखती बापू की टांग टूट गई
मां का मोतियाबिंद बढ़ता जा रहा है
सो, मैं डबल शिफ्ट करने लगा
आज हम सब बीच
चौराहे पर खड़े हैं
गांव जायेंगे इसी ज़िद पर अड़े हैं
वहां क्या करेंगे कुछ तय भी नहीं
मालिक ने मुड़कर हमें पूछा तक नहीं
सुनो रामसिंह....
अब तो आंखो में हक़ीकत की धूप मलें
चलो... अब अपने गांव लौट चलें।

इंडिगो ने तो भारतीय लोक धारणाओं की पुष्टि की

वक्रोक्ति

मुकेश नेमा
लेखक मप्र के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

बता नही सकते आपको। एयरपोर्ट पर सर पकड़े बैठे अमीर और अमीर दिखने की कोशिश मे अपनी जेबें कटवा रहे मिडिल क्लास लोगों को देखना कितना सुकून भरा है। भीड़ मची है। धक्का मुक्की का माहौल है।लोग कलप रहे है। खाने पीने के लाले पड़े हुए है। फ्लाइटें लेट हो रही है , रद्द की जा रही है। क्या करें ? कहाँ जाएं। किससे पूछें,किसे बताएं ,एकदम किंकर्तव्यविमूढ़ वाली स्थिति। कितना जाना पहचाना आत्मीय दृश्य।कस्बे के बस स्टेंड जैसा अपना। शहर के रेलवे स्टेशन जैसा प्रिय। ये सच्चा समाजवाद है। अमीर गरीब सब एक जैसे। सब दुखी। सब लाचार।अमीर आदमी का हैरान होना ,कलपना गरीबों को हमेशा तसल्ली देता है। लगता है कि जनता वोट देने के मामले भर मे एक जैसी नही है। लोकतंत्र की भावना दृढ़ होती है इससे। हम हमेशा से यही चाहते थे। और मन की होने से खुशी मिलती ही है।

एक मायने में रेल और बस से सफर करने वाले इन हवाई लोगों से बेहतर ही माने जाने चाहिए। दूरदर्शी,धैर्यवान और समझदार। बस और रेल से सफर करने वाले को पक्का भरोसा होता है कि ये लेट होगी।वो इनके वक्त पर आने पर चकित होता है और जब भी ये वक्त पर आ जाती है ,सफर करने वाला घर पर ही छूट जाता है। बस और ट्रेन से सफर करने वाला इनके न आने पर रोता पीटता नही। चीख चीख कर वीडियो नही बनाता। उसके चेहरे पर शिकन भी नही आती। वो आती जाती ट्रेनों की खिड़कियों मे मौजूद रमणीक महिलाओं को ताकता है और अकारण मुग्ध हो जाता है। भूख लगने पर अखबार बिछाता है। पांव फैलाकर बैठता है। साथ लाई पूड़ी अचार का भोग लगाता है और बहुत बार घर से भी ज्यादा गहरी नींद में सोता है। ऐसे मे हवा हवाई यात्रियों को सीखना चाहिए इनसे और रोने पीटने से परहेज करना चाहिए।

और फिर दूसरी एयरलाइन्स वालो के दाम चौगुना आठ गुना कर देने पर चकित लोग मुझे ऐसे लगते है जैसे वो मंगल ग्रह से आए हो। इसमें नया क्या है ? कोरोना के वक्त शराब और तंबाकू जैसी जनोपयोगी वस्तुएँ भी दस गुना दामों पर बिकी ही थी। तब कोई हैरान नही हुआ। हम सभी मानते है कि जो मौके का फायदा न उठा ले वो गधा। पूरे हिंदुस्तान में कहीं भी ट्रैफ़िक जाम हो भर जाए,आसपास की दुकानों मे मौजूद एक्सपायर डेट की मैगी और समोसों के दाम भी आसमान छूने लगते है। ऐसे में दूसरी एयरलाइंस वालो का बहती गंगा मे हाथ धो लेने को सामान्य लोकाचार ही माना जाना चाहिए।

मेरा यह मानना है कि इंडिगो ने एक बार फिर भारतीय लोक धारणाओं की पुष्टि की है। एक बार फिर बताया है हमें कि जब घर मे कोई अकेला बंदा कमा रहा हो तो उसकी हर उल्टी सीधी बात कानून होती है। बूढ़े पति अपनी कमउम्र पत्नी से कभी असहमत नही होते। दुधारू गाय यदि लात मार दे तो बुरा नही मानना चाहिए। और गांव की इकलौती भौजाई से ज्यादा खूबसूरत कोई नही होता। ये सब कहावतें याद दिलाने के लिए मैं भारतीय संस्कृति मे रची बसी इंडिगो का आभारी हूँ और आपको भी होना चाहिए।

मुस्कान के पीछे... तबाही की दास्तान !

❒ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता है-

यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में आग लगी हो
तो क्या तुम दूसरे कमरे में सो सकते हो?
यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में लाशें सड़ रहीं हों तो क्या तुम दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो?
यदि हां तो मुझे तुम से कुछ नहीं कहना है।

जब इस कविता को पढ़ें तो लगता है कितने बेदिल लोग होंगे, जो ऐसे वक्त में भी ना जागें। ग़ज़ा पर इजराइल बम गिरा रहा है, लेकिन हम नींद ले रहे हैं। इजराइल के बनने से अभी तक फलस्तीन से संबंध सुधर ही नहीं पाए हैं और यही वजह है कि उस इलाके से निकली फिल्मों और कविताओं में युद्ध और असर छाया रहता है।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म मेकर सेपिदेह फारसी इरान की हैं, लेकिन फ्रांस में रहती हैं। उन्होंने इजराइल के ग़ज़ा पर हमले को कैमरे की आंख से देखने की कोशिश की। उन्हें ग़ज़ा तक पहुंचने का कोई रास्ता

नहीं मिला, लेकिन इसी तलाश में उन्हें मिली फातिमा हसना। फकत चौबीस साल की यह लड़की जब मुस्कुराते, हिजाब ठीक करते कमजोर इंटरनेट कनेक्शन के सहारे अपनी बात कहती है तो दिल न जाने कितनी बार टूट जाता है। सेपिदेह और फातिमा की वीडियो कॉल की रिकॉर्डिंग से ही निकली है फिल्म **'पुट योर सोल ऑन योर हेंड एंड वॉक।'** फातिमा को फोटोग्राफी का शौक है और उसकी कुछ तस्वीरों से जो कहानी बयां होती है, मीडिया नहीं दिखाता है। फातिमा अपने परिवार और दोस्तों की मौत भी मुस्कान के पीछे छिपा जाती है। चॉकलेट खाकर दुनिया देखना है, लेकिन लौटना तो ग़ज़ा में ही है। इसीलिए रोज अमन और शांति की दुआ मांगती है। फिल्म के आखिर में डायरेक्टर सेपिदेह फोन पर फातिमा को खुशखबरी देती है कि फिल्म कॉन फिल्म फेस्टिवल में दिखाई जाएगी। खुशी-खुशी फ्रेंच वीजा मिलने के बारे में बात करते हैं कि गजा से फातिमा बाहर निकल सके। उसके दो दिन बाद ही खबर आती है कि फातिमा परिवार के साथ बमबारी में मारी गई। फातिमा ने सोचा था कि अनुभव बच्चों को बताएगी, लेकिन फिल्म देखने वालों के लिए सहेज लिया है।

फिल्म **'पुट योर सोल...'** याद से तारीफ में बदल जाती है। यह फातिमा की यादगार कहानी है, क्योंकि जिस महिला को हमने शानदार तस्वीरों, दिल को छू लेने वाली कविताओं, गानों और हिम्मत से जाना है, वह नश्वर है और अमर हो गई है। फातिमा को जानना तोहफा है। आतंक के सामने आम आबादी को चेहरा, जिंदगी और इच्छा देना, लेकिन यह इस बात की भी याद दिलाता है कि उसके जैसे और भी कई संहार मानव अभी भी हैं। फातिमा की कुछ उम्मीदों को सम्मान देने के साथ यह फिल्म इजराइल के शिकार के इतिहास में रहेगी।